सोहर बाबा गीतावली

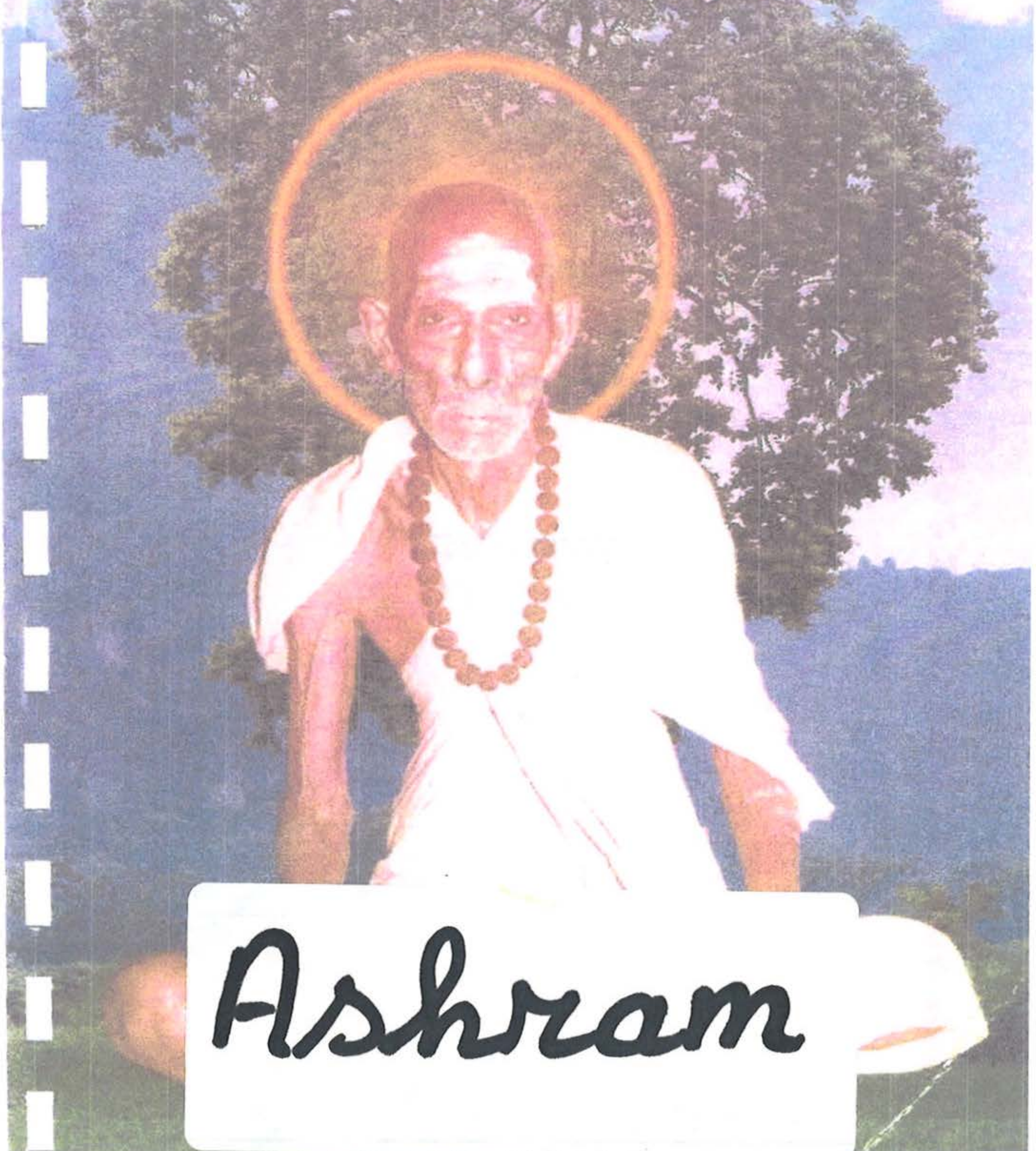

Ashram

सोहर बाबा गीतावली

सम्पादक :

डॉ० राजकुमार पाठक
(राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त)

भूमिका लेखक :

उमाशंकर मिश्र 'रसेन्दु'

प्रकाशक :

चित्रकूट अखण्डाश्रम भिदिउरा
ज्ञानपुर, भदोही

संस्करण : प्रथम 2003 ई०

सोहर बाबा गीतावली

सम्पादक :
डॉ० राजकुमार पाठक

प्रकाशक :
चित्रकूट अखण्डाश्रम भिदिउरा
ज्ञानपुर, भदोही

मूल्य : 30/- तीस रुपये

कम्प्यूटर कम्पोजिंग :
शान्ती कम्प्यूटर, इलाहाबाद • दूरभाष : 2451083

मुद्रक :
नीलम मुद्रणालय
1083 कल्याणी देवी, इलाहाबाद
दूरभाष : 2652603

जिनकी उदार कृपा से पुस्तक का प्रकाशन सम्भव हुआ

स्वामी स्वरूपानन्द परमहंस जी महराज चित्रकूट अखण्डाश्रम

श्री श्री 1008 स्वामी स्वरूपानन्द परमहंस जी महाराज का

सन्देश

मुझे यह जानकर अपार हर्ष हुआ कि 1008 श्री स्वामी हरिहरानन्द जी (सोहरबाबा) की रचनाओं को संकलित कर प्रकाशित करने का संकल्प 'शांकरी' साप्ताहिक के यशस्वी सम्पादक कविवर पं० उमाशंकर मिश्र 'रसेन्दु' तथा राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित साहित्यकार एवं हिन्दी के लब्ध प्रतिष्ठ विद्वान डाक्टर राजकुमार पाठक ने संयुक्त रूप से लिया है।

सोहर बाबा के प्रथम दर्शन का सौभाग्य मुझे उस समय मिला जब मैं तीसरी कक्षा का विद्यार्थी था। मेरे पूज्य पिता स्व० बाबा वैद्य से सोहर बाबा का अपार स्नेह था। वे उन्हें दर्शन देने के लिये मेरे पैतृक निवास भिदिउरा बराबर आया करते थे। उनका भाल उन्नत और काया लम्बी थी। वे मात्र अधोवस्त्र धारण करते थे। चरण पादुका पहने, तन में भस्म लगाये, कम्बल, जलपात्र एवं एक छोटी सी गिलास लिए आजीवन ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए भ्रमण करते रहे तथा कबीर की भाँति सामाजिक विकृतियों को दूर करने हेतु सदुपदेश करते रहे। उनके मोहक स्वर में 'बैरागी बनि जात्य त जमपुर

में मारा न जात्य' जैसी पंक्तियाँ जनमानस को आन्दोलित कर देती थीं। इनकी मधुर स्वर लहरी में सम्मोहन का जादू था। मानस प्रवचन करते समय इनके स्वरों के जादू ने मुझ पर ऐसा प्रभाव डाला कि सन् 1951 ई० में ही मैंने इन्हें अपना प्रथम गुरु स्वीकार कर लिया और इनके आचरण, संयम, नियम का अनुगामी बना।

सोहर बाबा ने ठेठ हिन्दी में सोहर, कजरी, लचारी तथा भजन जैसे ललित पदों का सृजन एवं गायन किया जिससे लोक मानस विशेषकर नारियों पर गहरा प्रभाव पड़ा।

आशा है इस पुस्तक के प्रकाशन से सोहर बाबा के विचार जन-जन तक पहुँच कर उनके मानस को आप्लावित करेंगे और लोक मन भाव विभोर हो कह उठेगा—

"हमार बिगड़ी राम ई कब बनउव्य
नरतन साधन धाम बनाई दिहे
माया नचावत बा कब तकि नचउव्य।"

स्वामी स्वरूपानन्द परमहंस
चित्रकूट अखण्डाश्रम भिदिउरा
ज्ञानपुर—भदोही

सम्पादकीय

सोहर बाबा सामाजिक, धार्मिक एवं आध्यात्मिक चेतना के उद्घोषक सन्त पुरुष हैं। उनको वाराणसी और विन्ध्याचल मण्डल के विभिन्न जनपदों के ग्राम्यांचलों में लोग श्रद्धा, भक्ति एवं आदर से देखते हैं और उनकी उपदेश भरी वाणी का रसास्वादन करते हैं।

सोहर बाबा की रचनाओं का एक संग्रह 'हरिहरानन्द गीतावली' पं० उमाशंकर मिश्र 'रसेन्दु' शांकरी आश्रम मीरजापुर द्वारा प्रकाशित है जिसमें उनके कुल 92 गीत संकलित हैं। बहुत दिनों से सोहर बाबा के भक्तों का आग्रह रहा कि उनके सभी गीतों का एक संकलन प्रकाशित किया जाय।

सोहर बाबा ने अपनी एक सौ चौदह वर्षों की लम्बी आयु में अनगिनत भजन, सोहर, कजरी, गारी और लचारी गीतों की रचना की जिसे उनके भक्तों और शिष्यों ने उनसे नोट किया। मैंने ऐसे लोगों से सम्पर्क कर रचनाओं को संकलित कर सम्पादित किया है। सर्वाधिक रचनायें मुझे सोहर बाबा के अनन्य भक्त एवं शिष्य स्वामी स्वरूपानन्द परमहंस, चित्रकूट अखण्डाश्रम भिदिउरा, ज्ञानपुर, भदोही तथा पं० उमाशंकर मिश्र शांकरी आश्रम मीरजापुर से प्राप्त हुई। कुछ रचनायें पं० शारदा प्रसाद पाठक 'व्यास' से भी मिलीं। यह दावा तो नहीं किया

जा सकता कि सोहर बाबा की सभी रचनायें इस संकलन में समाहित हो गयी हैं परन्तु इतना अवश्य कहा जा सकता है कि अब तक प्रकाशित संकलनों में यह सर्वाधिक बड़ा है।

प्रस्तुत संकलन के परिशिष्ट भाग में सोहर बाबा के अनन्य शिष्य उपकार चैतन्य ब्रह्मचारी (पं० उदयराज तिवारी वैद्य) की रचनाओं का भी संग्रह है जो सरल तथा बोधगम्य है।

पुस्तक का प्रकाशन चित्रकूट अखण्डाश्रम के सन्त स्वामी स्वरूपानन्द परमहंस की कृपा का फल है। यदि उनका आर्थिक सहयोग प्राप्त न होता तो पुस्तक का प्रकाशन सम्भव नहीं था। अतएव मैं उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए नतमस्तक हूं। पं० उमाशंकर मिश्र 'रसेन्दु' पुस्तक प्रकाशन के मूल प्रेरणास्रोत रहे हैं। इस पुनीत कार्य हेतु स्वामीजी को बराबर प्रेरित करते रहे। वे मेरे अत्यन्त आदरणीय हैं। उनके प्रति भी मैं हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता हूं।

पुस्तक का मूल्यांकन तो पाठकगण ही करेंगे। यदि इस संकलन से पाठकों को कुछ मानसिक सन्तोष एवं प्रेरणा मिल सके तो हम अपना प्रयास सार्थक समझेंगे।

मेरा मुझमें कुछ नहीं जो कुछ है सो तोर।
तेरा तुझको सौंपता क्या लागत है मोर॥

विनम्र

डॉ० राजकुमार पाठक
(राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त)
हिन्दी प्रवक्ता
वि० ना० राजकीय इण्टर कालेज
ज्ञानपुर, भदोही
फोन : 250695

भूमिका

सोहर बाबा : जीवन और साहित्य

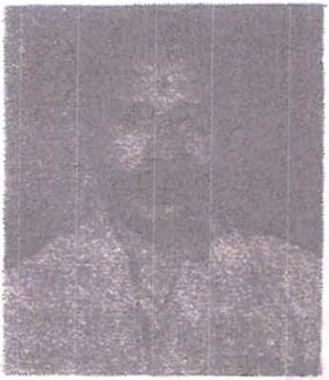

सोहर बाबा का जन्म सन् 1877 ई० की चैत्र शुक्ल एकादशी को गुरुवार के दिन भदोही जिले की ज्ञानपुर तहसील के गंगा तट पर बसे ग्राम विहरोजपुर में हुआ। इनके पिता पं० हरि नारायण दीक्षित रामानुरागी थे और माता सुशीला देवी नाम के अनुरूप ही सुशील एवं पुरातन संस्कारों से अनुराग रखने वाली थीं। माता-पिता द्वारा रखा गया सोहर बाबा का नाम हरिमूरति था। बालक हरिमूरति को माता-पिता का स्नेहमय सानिध्य अधिक नहीं मिल सका। पांच वर्ष की अल्पायु में ही इनके माता-पिता स्वर्गवासी हो गये। बालक हरिमूरति अनाथ हो गये। ऐसी स्थिति में उन्हें अपने बूआ के यहाँ शरण लेनी पड़ी। उनकी बूआ ज्ञानपुर से पूरब स्थित बैराखास ग्राम में ब्याही थीं। अपनी बूआ के यहाँ रहकर सोहर बाबा बालक हरिमूरति के रूप में गायें चराते थे। बूआ के घर पर उनकी शिक्षा-दीक्षा की कोई व्यवस्था नहीं हो सकी, किन्तु लगनशील बालक हरिमूरति ने जमीन पर ही लिखना-पढ़ना आरम्भ किया और कुछ ही दिनों में वे साक्षर हो गये। उनकी लगन रामचरित मानस पढ़ने में थी। बूआ के घर पर उनकी इस अभिलाषा की पूर्ति में बाधा आ रही थी फलतः ये अपनी जन्मभूमि विहरोजपुर वापस आ गये और अपने पैतृक निवास में रहने लगे।

विहरोजपुर आने के बाद इनके सम्बन्धियों ने इन पर विवाह करके गृहस्थी बसाने के लिये दबाव डालना प्रारम्भ किया, किन्तु हरिमूरति ने आजीवन ब्रह्मचर्य रहकर ईश्वर भक्ति के मार्ग पर चलने का संकल्प ले लिया था। इसलिये इन्होंने विवाह करने से स्पष्ट इन्कार कर दिया। वे रामकथा में रुचि लेने लगे और गाँव-गाँव में जाकर राम कथा कहने लगे तथा धर्म का प्रचार-प्रसार करने लगे। कथा के बीच वे भजन बनाकर गाने और अपनी मधुर स्वर लहरी से जनमानस को मुग्ध कर लेते। इनकी कथा सुनने के लिये गाँवों में स्त्रियों, वृद्धों एवं भक्तों की भारी भीड़ एकत्र होती। धीरे-धीरे ये हरिमूरति ब्रह्मचारी के नाम से प्रसिद्ध हो गये।

सोहर बाबा ने सभी तीर्थों की यात्रा की थी। प्रयाग माघ मेले में धर्म सम्राट स्वामी करपात्री जी महाराज के कथा पण्डाल में आपकी कथा बराबर हुआ करती थी। स्वामी करपात्री जी महाराज आपके भजनों के बड़े प्रशंसक रहे। वे आपका भजन "कैसे धरउँ मन में धीरा हमार दुनउ हीरा निसरि गये" प्रायः आपके श्रीमुख से सुना करते थे।

सोहर बाबा ने भारतीय धर्म और संस्कृति में स्वीकृत पितरों के लिये परम्परागत संस्कार गया श्राद्ध भी किया।

आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हुए सोहर बाबा केवल एक ही बार भोजन करते थे। यह नियम उनके जीवन के अन्तिम समय तक चलता रहा। भजन और कीर्तन करते हुए वे कबीर की भाँति बराबर चलते रहे। कबीर की ही भाँति वे गाँवों में सद्विचारों के लिये लोगों को समझाते और गीतों के माध्यम से उन्हें प्रभावित करते रहे।

गाँवों में स्त्रियों द्वारा गाये जाने वाले ग्राम्य गीतों जैसे—सोहर, लचारी, कजली तथा गारी की अश्लीलताओं से सोहर बाबा चिन्तित रहते थे। इसीलिये उन्होंने, धार्मिक आख्यानों पर आधारित वेदान्तपरक गीतों की सहज क्षेत्रीय बोली में रचना की। सोहर गीतों में इनकी भावाभिव्यक्ति अत्यन्त हृदयग्राही है। सोहर के लिये इनकी लोकप्रियता इतनी बढ़ी कि सोहर बाबा के नाम से विख्यात हो गये।

हरिमूरति ब्रह्मचारी उर्फ सोहर बाबा ने बड़ी लम्बी आयु पायी थी उन्होंने अपने जीवन के 105 वर्ष पूरे होने के बाद 6 फरवरी, 1982 में गीतास्वामी जी महाराज से संन्यास की दीक्षा ली। पूज्य पाद गीतास्वामी जी ने दीक्षोपरान्त उन्हें स्वामी हरिहरानन्द सरस्वती नाम दिया और वृद्धावस्था के कारण उन्हें गीता भवन ट्रस्ट, नटवा, मीरजापुर में ही स्थायी निवास का आदेश दिया, परन्तु गीता स्वामी महाराज की मृत्यु के पश्चात् किसी कारणवश सोहर बाबा गीता भवन ट्रस्ट नटवा छोड़कर औराई के समीप सैरे गाँव में बूढ़ेनाथ मन्दिर के पास एक कुटिया में रहने लगे थे जहाँ गाँव के भक्तों की भीड़ उनके दर्शन एवं भजन सुनने के लिये लगी रहती थी। उनके परम शिष्य प्रकाश चैतन्य ब्रह्मचारी प्रह्लाद दास एवं उपकार चैतन्य ब्रह्मचारी (पं० उदयराज तिवारी वैद्य) सोहर बाबा की अन्तिम समय तक सेवा करते रहे।

सोहर बाबा ने 114 वर्ष तक की अपनी लम्बी आयु पूर्ण कर 18 अगस्त, 1991 में सैरे (सायरकोट) ग्राम में अपने शरीर का त्याग किया।

सोहर बाबा की रचनाएँ बड़े आदर के साथ ग्रामीण महिलाओं के कलकण्ठ से सुनी जाती हैं। **''घरही में मन्दिर बनइबइ तीरथ हम घूमइ न जइबइ। सासू के गौरा ससुरजी के शंकर पति जी के विष्णु बनइबई''**। कैसी विमल उत्प्रेक्षा है। पवित्रता का स्वरूप आँखों के सामने नृत्य करने लगता है। ऐसे पदों के लिये विख्यात सोहर बाबा जनमानस में अत्यन्त आदरणीय हैं। इनके भजन, लचारी, सोहर, कजली और गारी चारित्रिक संकट से त्रास दिलाने वाली हैं। वास्तव में सोहर बाबा के पदों में श्रुति सम्मोहन मंत्र जागृत है।

विषयासक्त मानवों को देखकर युगदर्शी संत का हृदय आन्दोलित हो उठता है। वह संसार की असारता को बताकर भूले पथिक को सचेत करना चाहता है। लोक मंगल की कितनी महनीय उद्भावना है। जो व्यक्ति सुन्दर देह-गेह को पाकर सद्गुणों का उपार्जन नहीं करता वह कितना असहाय है—

"विषय वासना में मन के लगाइ दिहे
काम सब नसाइ दिहे ना।
मिला नरतन अनमोल ऊपर पालिस तरे पोल
ढोल के समान गाल खुब बजाइ दिहे॥ काम सब०॥"

लोकभाषा में मीरजापुरी कजली की लोकप्रियता सर्वविदित है। पं० बदरीनाथ उपाध्याय 'प्रेमघन', भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जैसे साहित्यकारों ने कजली माधुर्य की मुक्त कण्ठ से सराहना की है। सोहर बाबा की कजली विन्ध्याचल मण्डल में समादृत है। संसार से परलोक यात्रा करने वाले जीव रूपी सुहागिन को सम्बोधित करने वाली कजली निर्गुन गीत का प्रतिनिधित्व तो करती ही है साथ ही महाप्रस्थान की संवेदना और जीव सुहागिन की अन्तर्कथा का भी दिग्दर्शन कराती है—

"हमरे गबने क सुदिनवां लइके आए बभनवाँ ना।
मातु पिता जानइ नहि पाए सुनि के कोपे बिरनवाँ ना॥"

बाबा के भजन बड़े अनूठे हैं। उनमें विविध उद्भावनायें समर्पण और परमात्मा के प्रति असीम आकर्षण है। रसना को सम्बोधित करते हुए सोहर बाबा कहते हैं—

गोविन्द गोविन्द बोल मोरी रसना।
मुख मन्दिर में मौन पड़ी क्यों धीरे-धीरे अब डोल मोरी रसना।
बनिजा रसना रसिक रामरस मधुर-मधुर मृदु, बोल मोरी रसना।

वाणी के इस वरद पुत्र की वाणी में वीणा की झंकार गूंज रही है। विश्वास है 'सोहर बाबा गीतावली' सहृदयों को रससिक्त कर समाज में एक स्वस्थ पवित्र परम्परा को गति प्रदान करेगी।

उमाशंकर मिश्र 'रसेन्दु'
सम्पादक
'शांकरी' साप्ताहिक
महुवरिया, मीरजापुर

गुरु वन्दना

(1)

गुरु पद पदुम पावन से मोह जलधी थहायेंगे।
चरण कमलों की रज लेकर मृदुल अंजन बनायेंगे ॥ टेक ॥
गुरु ब्रह्मा, गुरु विष्णु गुरु शंकर से प्यारे हैं।
गुरु गोविन्द गोबरधन की न्यारी छवि दिखायेंगे ॥
गुरु की जो दया दृष्टि सो सृष्टी को दिखाती है।
बचाती त्रीयुगी माया से मन फिर न बँधायेंगे ॥
उठे अनुराग उर मेरे, कमल कर में लिए धनु सर।
उसी भगवान के आश्रित, सदा मन को मनायेंगे ॥
ग्राम विहरोजपुरवासी निवासी तीर गंगा के।
जो झूठा नाम साधू धरि, गुरु पद सिर चढ़ायेंगे ॥

(2)

कृपा गुरु देव की होगी भेद भ्रम छूट जायेंगे ॥ टेक ॥
बँधे ममता के तागों से भटकते कल्प-कल्पों से
गुरु जी जब झटकि देंगे तो तागे टूट जायेंगे ॥ कृपा० ॥
तन घड़ा है भरा गन्दा, बड़ा अभिमान करते हो।
गुरु बैराग कंकड़ से हने तो फूट जायेंगे ॥ कृपा० ॥
तन-धन-धाम-रत्नों का खजाना जो धरा भर के ॥
देखते देखते तेरे एक दिन लूट जायेंगे ॥ कृपा० ॥
हरिहरानन्द मन चंचल, पकड़ने पर छलक जाता
गुरु समझा-बुझा देंगे तो जग से रुठ जायेंगे ॥ कृपा० ॥

चेतावनी

(3)

जाना बा बड़ी दूर अरे मन जागो अनारी॥ टेक॥

मालिक का परवाना पहुँचिगा और कहरिया चारी॥ 1॥

धूमिल होइ गइ सबुज रंग सारी, केहि विधि करबतयारी॥ 2॥

कवन जबाब करब मालिक सों काँपत देहिया हमारी अरे०॥ 3॥

पाप गठरिया जब सिर पर देखिहीं, मरिहै खैंचि कटारी अरे० ॥ 4॥

हे मन रामनाम बिन सुमिरन, धइ परब्य जम की बेगारी। अरे० ॥ 5॥

सोहर बाबा दुख सहत अमित विधि, हरिपद कमल बिसारी अरे० ॥ 4॥

(4)

महामोह निद्रा से जागो मुसाफिर , तुम्हें दूर जाना अकेला पड़ेगा।

इहाँ के सभी साथी छूटेंगे तेरो अखिरी जिगर पै झमेला पड़ेगा।

मन सारथी इन्द्री घोड़े घुमा दो जिधर तेरे जी का सहेला पड़ेगा।

महा शून्य मारग छुरा सी है धारा नहीं दुनियाँ दारी का मेला पड़ेगा।

परम शान्ति सुख की तहाँ है न सीवाँ, नहीं काल कलऊ का खेला पड़ेगा।

(5)

अखीरी दिन का कोई साथी नहीं है ॥ टेक ॥

राजा चले राजपाट छुटा ठौर-ठौर सेना रथबाजि साथ हाथी नहीं है।

चले जब पुजारी मूरति मन्दिर के बीच छुटी घंटी औ शंख पोथी पाथी नहीं है।

चले जब सोनार सोना कोना के बीच छुटा, सड़सी हथौड़ी साथ भाथी नहीं है।

चले सब अकेला छुटा दुनियाँ का मेला रहिया में निरखन को थाती नहीं है।

(6)

एतनइ दिल में बिचारो जगत की क्या रचना है? ॥ टेक ॥

तन-धन-भवन आदि सुख सम्पत्ति, सब माया के जाल ये दो दिन का सपना है।

काम-क्रोध-मद-लोभ प्रबल ठग माया के सरदार सदा इनसे बचना है।

शिव सेवा सतसंग साधु क इसमें बारम्बार बैठि मन को कसना है।

सोहर बाबा मन मन्दिर भीतर हरि छवि बारम्बार निरखि निसिदिन हँसना है॥

प्रभाती

(7)

जाग हो श्याम सुन्दर सबेर भये ॥ टेक ॥

ग्वाल-बाल सब सखा खड़े हैं हुँकर रहीं गैये, चरावन को देर भये।
लाल शीश बीच कमल कली खिली विकसि रहे मधुप, मधुर गान करत झुण्डन बसेर भये॥
सुनि के मृदु बैन नैन खोल बोल उठे श्याम, लाल-लाल अधरन से मुरली की टेर भये॥
जानि अवलोकत मोहन सोहर बाबा, छवि निरखि-निरखि मोहरूपी निशा भगी उर में उजेर भये॥

(8)

जागि जा मन जोगी भई अब बेला चलन क॥ टेक॥
मारग अगम संग नहिं सम्बल, तेंहि पर रहिया न जानी
परावा डेरा ठगन क॥
बहुत दिनन से ठग संग लगि गये तनिकउ गाफिल परव्य
लेइ लेइहैंइ पूँजी रतन क॥
सत् गुरु से लेइल नाम पहरुवा विरति चरम संतोष असि
सिर काट ठगन क॥
जग से विजय कइके आगे निकरि चल तब दरशन होइहैं
राम पगन क॥ जागि०॥

(9)

जागो सज्जन वृन्द हमारे मोह निशा के सोवनि हारे॥ टेक॥
सोते-सोते जनम गवाँया, देह गेह में मन भरमाया
अब तक चेत तुझे नहिं आया, छोड़ो नींद उठो अब प्यारे॥ 1॥
यह संसार जान लो सपना सुत दारा कोई नहिं अपना
मेरा तेरा झूठि कल्पना भूले हो किसमें तुम प्यारे॥ 2॥
काम-क्रोध ने जीव खजाना, सूते पर लूटा मन-माना
अब तक तूँ इनको नहिं जाना मस्त पड़े सोते मतवारे॥ 3॥
सोते-सोते हुआ सबेरा मोह निशा की उठि गइ डेरा
ज्ञान-भानु उर किया उजेरा आशा-दुख अस्त भये तारे॥ जागो०॥ 4॥

भजन-कीर्तन

हनुमत् स्तुति

(10)

जय-जय समीर नन्दन जय बाल ब्रह्मचारी ॥ टेक ॥
जय वीरबली बजरंगी हनुमान गदाधारी।
जय असुर दल निकन्दन सुर संत कष्टहारी।
जय लखन प्राण दाता सियमातु शोक हारी।
जय लाल बदनधारी कुण्डल की ज्योति न्यारी।
जय अंजनी दुलारे लांगूल लोल धारी।
जय कनक देह वाले जय संत शोक हारी।
जय वारि निधि लँघइया दसकण्ठ गर्वहारी।

(11)

जय हनुमन्त राम के पायक जय-जय।
करत विनोद मोद जननी के लीलि गयो रवि जाय लोक भयदायक।
दुहुकर गदा-बज्र अति शोभित, कुंडल-कुंचित केश-भेष सुखदायक ॥
लाल देह शोभा विशाल अति लखि मन होत निहाल काल भयदायक ॥
सोहर बाबा हनुमत करनी पेखि-पेखि होत मुदित पुलकित रघुनायक ॥

रामस्तुति

(12)

सीताराम सीताराम आठों याम बोला करो ॥ टेक ॥
दुनियाँ की विचित्र चित्रकारी चित्त दूर करो,
संतन के दरश हेतु विमल नयन खोला करो ॥
ममता के प्रबल ताग बंधे जात बार-बार,
जोग जुगुति धीरे-धीरे मोह गाँठि खोला करो।
माया की विशाल जाल बिछी हुयी चारों ओर,
विषय रूपी काँटे खिले, समझ-समझ डोला करो ॥
माया की बजार में बनजारा बनके उतर पड़ो,
सत्य काँटा धर्म बटखरा से नाम तोला करो ॥
तृष्णा तरंग मन कुरंग रंग दूर करो,
रामचरित मानस में मज्जि विमल चोला करो ॥ सीताराम० ॥

(13)

दशरथ जी के लाल मिलब्य कवने जतन से ॥ टेक ॥
सिर पर मुकुट मनोहर सोहै चन्दन सोहै भाल ॥
भौंह कमान नयन रतनारे गभुवारे कारे बाल ॥
मृदु मुसुकान दमक दामिनि इव अधरन की दुति लाल ॥
कुण्डल कान कपोल मणिन को, गर पहिने बन माल ॥
कर कमलन धनु सायक फेरत आवत ज्यों गज चाल ॥
ठुमुकि चलत पद नूपुर राजत, धुनि ज्यों होत रसाल ॥
श्याम सरूप अनूप दरस बिनु, छुटहिं न माया जाल ॥
सोहरबाबा राम गुन गावत, डरपत है लखि काल ॥

(14)

अजब तेरी झाँकी है रघुनन्दन॥ टेक॥

क्रीट-मुकुट मकराकृत कुण्डल, लसत मन राँकी॥

भौंह कमान नयन रतनारे, चितवनि बड़ी बाँकी॥

झिलमिल-झिलमिल चादर ओढ़े, जमा जोड़ि बाँकी॥

हिर-फिर हिर-फिर नृत्य करत हो, पैजनि बाजे बाँकी॥

अधम-अधीन जीव यह चाहत दृगन बीच राखी॥

सोहर बाबा बताय रहे गाइ-गाइ सहज सुखरासी॥

(15)

बटोही बने बाँके सहज सलोना॥ टेक॥

बलकल बसन भेष मुनिवर को जटा मुकुट छवि लोना॥

श्यामल गौर और नहिं पटतर, कोटि मार मद खोना॥

युगल किशोर किशोरी साथ में, हैं कोई भूप के छोना॥

सोहरबाबा मिलहिं जो विधिवस, राखो दृगन के कोना॥

(16)

तनिक तनी राम गुन गाये चल भइया॥ टेक॥

भव सागर तारन के कारन राम बनाये नरतन नैया॥

राम आराम जगत में देइहैं, जम के फन्दा कटैया॥

तन-धन-धाम साथ न जइहैं छुटि जइहैं पितु-मैया॥

सोहर बाबा राम भजन बिनु, कोई न लागे सहैया॥

(17)

मिलिहँइ कैसे राम, जोग जुगुति कछु नाहीं ॥ टेक ॥
नहिं सतसंग संत-सज्जनकर, नाहीं भगति ललाम ॥
गुरुपद प्रेम नेम नहिं पूजन, लपटेऊ धन-धाम ॥
एकउ पल कबहूँ न मगन मन, सुमिरेउ सीता राम ॥
दिन-दिन मन विषयन संग धावत, विधिगत होइगा बाम।
सोहर बाबा हरि मिलँइ संत कहँ, सहते जो शीत घाम।

(18)

रामजी की चितवनियाँ में जादू बसी ॥ टेक ॥
हम सखियन मिथिलावासी को, प्रेम डोर की फाँसी फँसी ॥
पीताम्बर वरगात विराजत, जनु दामिनि घन बीच लसी ॥
टेढ़ो मुकुट भौंह करि टेढ़ी, दृगन के मग उर जाइ धँसी ॥
सोहरबाबा दृगन सर लागत रोना विसरि गये भूली हँसी ॥

(19)

नजर में बसि गयो साँवरो री ॥ टेक ॥
दाड़िम दसन अधर अरुनारे मधुर मन्द हँसि गयो साँवरो री ॥
पीताम्बर की झलक झलमली, गगन उर लसि गयो साँवरो री।
मन-मधुकर भगि गयो साथ ही कमल पद कसि गयो साँवरो री ॥
सोहर बाबा विदेह सपरिजन, सुधा सिन्धु धरि गयो साँवरो री ॥

(21)

हरि मेरो जनम-जनम के साथी ॥ टेक ॥
गर्भवास में मिले प्रभू जब धरि दिहे भजन की थाती ॥
वह थाती में भरा रतन धन प्रभु गुन गन की गाथी ॥
वृथा श्वांस गये राम भजन बिन जस लोहार की भाथी ॥
बिनु हरि भजन मोहबन भटकत जइसे पागल हाथी ॥
रामचरन तजि फिरत मगन मन, बलि पशुअन की भाँती ॥
सोहर बाबा मिलँइ भजन से लखँइ न जाति-कुजाती ॥

(21)

सिया के पिया हिया बसि गये मोरे॥ टेक॥
कोटि मनोज हरत मन आनन, टोना बसल बा दृगन के कोरे॥
श्याम बरन तन केकि कंठ दुति, सरल सुभाव लखन तन गोरे॥
कवनि बड़ाई सुनायी ललन को, मिथिला में आए सिया के निहोरे॥
सोहर बाबा मगन भई सखि सब, प्रेम क ताग टुटत नहिं तोरे॥

(22)

टूटी हो आज धनुहीं जनकपुर॥ टेक॥
राजा जनक परन एक ठान्यो भूपन की भीर जूटी हो॥
बड़े-बड़े भूपन क भुजबल थाक्यो, तिलभर भूमि न छूटी हो॥
मुनि के संग दुइ बालक आए, पिए प्रेम रस बूटी हो॥
रामचन्द्र जब धनुषा तोर्यो, भूपन की किस्मत फूटी हो॥
सोहर बाबा मगन जग जै-जै, नभ कुसुमावलि छूटी हो॥

(23)

रीझैं राम कवनी बानी न जानी जाय॥ टेक॥
जोगी खोजैं जोग जुगुति से; आयू सकल सिरानी॥
बड़े-बड़े राजा दरश के कारण, तजि-तजि गये रजधानी॥
मिला न दर्शन हरि चरनन का, आयू की भइ हानी॥
विप्र अजामिल पाप क राशी पल में भइ अघ हानी॥
शबरी नारि जाति की भीलनि, होइ गइ परम सयानी॥
दुर्योधन घर मेवा त्यागे साग विदुर घर सानी॥
ध्रुव, प्रह्लाद ने बाले पन से राम भगति उर आनी॥

(24)

श्री रामचन्द्र स्वामी सुनिये विनय हमारी
कीजै नजर दया की आया शरण तुम्हारी।।
भव रोग-शोक छूटे, दुनियाँ की नेह टूटे
लागे लगन तुम्हीं से यह कामना हमारी।।
सुख परम धाम अवध में प्रभुवास मोहि दीजै
जीवन प्रमोद कुंजन लीला लखै तुम्हारी।।
तन अमित श्याम सुभग छवि देत पीत जामा
लखि लजित कोटि काम कर कंज चाँपधारी।।
सिर क्रीट-मुकुट कुण्डल नाशा कपोल शोभित
भौहे कमान सी हैं काजल की रेख न्यारी॥
मुख में है पान बीरी, मुसुकान सब को मोहे
दृग सैन बाँकुरी है, भृगुटी कठिन कटारी॥
घुघुरारी कारी अलकें, मुख छवि अधिक बढ़ाये
अहिनी सी कारी-कारी, तन-प्रान हरन हारी॥
सुन्दर नवलि रंगीली मिथिला नगर की बाला,
दहिने लखन विराजे, बायें जनक दुलारी॥
रहूँ ध्यान में तुम्हारे मन मगन सदा प्यारे,
विनवै जनक दुलारी जय अवध के बिहारी॥
सम्मुख समीर नन्दन कर चमर भाल चन्दन
सोहरबाबा अरजी तिहारी तन ताप हरण हारी॥

(25)

राम मिलन कब होइहैं सेबरी सोचत मन में॥ टेक॥
बहुत दिवस गये हरिपद सुमिरत तीनिऊँ पन गये बन में॥
की प्रभु खबरि हमारि विसरि गये, प्रेम मगन मुनिगन में॥
की कहुँ भीर परी भक्तन पर, लड़त धनुष लिए रन में॥
सीता की खोज भुलाय दयानिधि, आइ मिले वहिं छन में॥
राम क रूप विलोकि मगन भई लिपटि गयी चरनन में॥

(26)

प्यारे भज लो सीताराम, तिहारो बनि जइहैं सब काम
राम नाम का टेर लगाओ, नरतन का सुन्दर फल पाओ॥
प्रेम से सुमिरौ आठोयाम, तुम्हारो बनि जइहैं सब काम॥
जब प्रह्लाद नाम धुनि लायो, पिता के द्वारा बहु दुःख पायो
नरहरि तन धरि हिरणाकुश को, प्रभु दीन्हों निज धाम॥
ध्रुव गलानि से तजि निजधाम, वृन्दावन में सुमिर्यो नाम
कृपा प्रभु की हुयी पा गयो, अचल धाम विश्राम॥
द्रुपद सुता करुणा करि रोई, नहीं सहायक पायो कोई
करुणा करि के लाज बचायो, बसन बढ़ायो श्याम॥
जब गज ग्राह डुबावन लागा, भयाराम पर तेहि अनुरागा
प्राण बचाने स्वयं आ गये नटवर जगपति श्याम॥
बाल्मीकि उल्टा गुन गायो, अनुपम ब्रह्म रूप को पायो
सोहर बाबा विनय करत, सज्जन पावत विश्राम॥

(27)

श्री सीताराम नाम रसपान कर रसना ॥ टेक ॥
जौ तू रसना राम रस पान कर, छूटै विषय क बसना ॥
मोह निशा में सोय बहुत दिन, अब चाहे तोहै जगना ॥
जिनके आपन कइके जानत वो सब होइ जइहीं सपना ॥
प्राण पखेरु जब तन तजिहैं, पउव्य तीन गज कफना ॥
सीताराम रटन करु प्यारे, जो चाहो हरिपुर बसना ॥

(28)

राम लला रीझि गये तन्दुल बैर कहूँ केला के छिलका ॥ टेक ॥
पानी परात धरे पग धोवत मित्र थका आइबा मंजिल का ॥
चाउर सुदामा क छीनि-छीनि खाइ गये, कपड़ा पुराना फटा झिलका ॥
रामप्यारे प्रेम के भूखे, सच्चा मिले प्रेमी दिल का ॥
ऐसे हरी को जो प्रेम से बाँधे वही बड़ा सच्चा अकिल का ॥

(29)

बैर लिहे सेबरी राम मग जो है ॥ टेक ॥
राम मिलन की चिन्ता बसी उर, भूलि गये तनु भगे काम मद को है ॥
रामलला की झांकी अनोखी, पटतर जोग और जग को है ॥
मज्जन करि सर साजि आरती प्रेम रूपी तागों से नाम मोती पो है ॥
आये राम लखन संग लेइके, जटा-मुकुट अनुपम छवि सोहै ॥
श्यामल गौर रूप किमि बरनौ, कोटिन मदन बदन पर मोहै ॥

(30)

श्री अवधेश दुलारे दीनन के रखवारे ॥ टेक ॥
दीन दशा वह कब होइहैं मोरी, जब तुम बनोगे हमारे ॥
ये अभिमान सहित षट् शत्रुन, बसि गये हृदय हमारे ।
कोटिन जतन टरत नहिं टारे, सर कुभोग हनि मारे ॥
कर सरोज सर साजि मिलहु अब, नाथ अनाथन प्यारे ॥
कलिमल ग्रसित दीन सोहर बाबा, तुम बिन कौन उबारे ॥

(31)

राम भजन में लगिजा सब दुःख दूरि परइहैं ॥ टेक ॥
मोहं फाँस में बँधा फिरत जीव, हरि निज हाथ छोड़इहैं ॥
सुख सम्पत्ति हरि भगति आदि सब, प्रभु तब आनि मिलइहैं ॥
काल महा बलवान जगत में, सोलखि तुम्हहिं डेरइहैं ॥
सोहर बाबा त्रय ताप ज्वाल हित, सुजस नीर बरसइहैं ॥

(32)

बने आज दुलहा राम पिया सिया के ॥ टेक ॥
माथे मौर केसरिया जामा, जुल्फ जंजीरन फँसाये जिया के ॥
मधुर अली वह युगल चरन में, तन मन धन सब वार दिया के ॥
जिन पद रज छुइ तरी अहिल्या, ये वासी हैं शंभु हिया के ॥
सोहर बाबा युगल झांकी छवि, उर न बसा तन कौने क्रिया के ॥

(33)

सखी री मैं तो तीन देखी प्रात ॥ टेक ॥
एक तो नील वरन तन की दुति दूजे गोरे गात,
उभय मध्य एक भामिनि राजति, बिनु शृंगार सोहात ॥ 1 ॥
बल्कल बसन कनक सर पूरित कटि तट त्रोण सोहात,
कर कमलन धनु सायक फेरत, लखि अरिदल भय खात ॥ 2 ॥
चरण कमल नख बिन्दु इन्दु इव लखि त्रय ताप नसात,
मुनि मन अलिगन अवलि सरिस संघ निसि दिन निरखि लोभात ॥ 3 ॥
कमल नयन मृदु वैन मनोहर सुनिकल कण्ठ लजात
दाड़िम-दसन अधर अरुनारे मंद-मंद मुसुकात ॥ 4 ॥
सोहर बाबा विपिन बटोही मानो सगे सोहात,
ठगे गये वनवासी खग-मृग नयनन मग उर जात ॥ 5 ॥

(34)

सीताराम सीता रटन लागी ॥ टेक ॥
लागी लगन जब राम रटन में, दारुण विपति कुमति भागी ॥ सीता॰ ॥
उठा नाम झंकार हृदय में, आयी भगति सुमति जागी ॥ सीता॰ ॥
रामपिता जग जननि जानकी, झाँकी अनोखी प्रेम पागी ॥ सीता॰ ॥
सोहर बाबा कटा भवबन्धन, जब हरिभजन मीठ लागी ॥ सीता॰ ॥

(35)

हमइ बा केवल नामइ भरोसा ॥ टेक ॥
नाम दानी के द्वारे बइठि के दूनउ जून पाई थ परोसा ॥
रामइ उदार से इ तन मिलाबा, ओन ही के कर से उदर गये पोसा ॥
राम शरण तजि अन्तइ भटकव्य षट् ठगहारन से जाब्य घोंसा ॥
यह कलिकाल कुठार लिए कर, संतन के ऊपर बाटइ खुब रोसा ॥

(36)

हमार बिगड़ी राम इ कब बनउव्य ॥ टेक ॥
नर तन साधन धाम बनाइ दिहे, माया नचावत ब कब तकि नचउव्य ॥
काम क्रोध मद उर में बसेर किए, लइके कमलकर सर कब भगउव्य ॥
झीनी चदरिया में दगवा लगल बा, सद्‌गुरु प्रेम जल से कब धोवइव्य ॥
सोहर बाबा सोहरवई में फँसि गये, ई फाँसी तोर-मोर की कब छोड़उव्य ॥

(37)

बनाव मीत-मितउ राम रमइया ॥ टेक ॥
धोखेदार मीत हित जग के, अन्त में न केउ काम देवइया ॥
राम अवध तजि वन-वन विचरत, खल, दल मूल नइसया ॥
ग्रसित ग्राह गजंराज उबार्‌यो, द्रुपद सुता की चीर बढ़इया ॥
सोहर बाबा जनन के कारण, वनि बराह कियो विष्ठा सफइया ॥

(38)

मिलेंगे क्यों न जब राम नाम टेरैंगे ॥
जग है अनूठ, झूठ सत्य सा प्रतीत होत,
तृष्णा तरंग से कुरंग मनको फेरेंगे ॥
नाम रूपी रवि को जब हृदय में प्रकाशेंगे,
महामोह निविड़ तम उर से निबेरेंगे ॥
भूप रूप अनुपम सरूप उर में धारेंगे,
मन अली पराग हेतु आस-पास घेरेंगे ॥
नाम रूपी मोती प्रेम धागों से तानि पोहि,
तन भवन के बीच बैठि उरकर से फेरेंगे ॥

(39)

चले राम बालकवृन्द मझारी ॥ टेक ॥
कोउ पग पकरि युगल कर कोमल, कोउ पीताम्बर धारी ॥
कोउ कह गमन भवन मम कइके, तारो वृद्ध महतारी ॥
कोउ व्यंजन फल मेवा लिये कोउ, भरे कनक की थारी ॥
कहि मृदुबानी लिये कर में पानी, झुकि-झुकि चरन पखारी ॥
बाल विनोद विलोकि मगन मन, सोहर बाबा अनारी ॥

(40)

भजु दशरथ नन्दन जनक लली ॥ टेक ॥
यह देखि रह्यो सो सपना है, सपने का नहीं कुछ अपना है
जीवन के सुख की साँची कली ॥ भजु० ॥
यह नरतन साधन धाम मिला, इस धाम में बहु ठगहार हिला
घन घोर निशा बसी मोह गली ॥ भजु० ॥
यहँ मोहनिशा से जागोगे, जब हरि चरनन अनुरागोगे
अनुराग बढ़े तनु नली-नली ॥ भजु० ॥
अनुराग ताग जब तानोगे, शिशु अबुध सुवन तब मानोगे
पद पावन प्रेम प्रवाह चली ॥ भजु० ॥

(41)

भजत कस नाहीं राम रघुरइया॥ टेक॥
तीन बेर भोजन के चाहे, मिसिरी दूध मलइया॥
तोसक गुल-गुल बिछौना चाहे, तकिया और दुलइया॥
भजन की दइयां अतर मलत हैं, आलस औ जमुहइया॥
काल अचानक आइ धरे जब, केउ न लागे सहइया॥
प्रेम मगन गुन कबहूँ न गाये, छाँड़ि कपट चतुरइया॥

(42)

सीताराम-सीताराम-सीताराम-सीताराम॥ टेक॥
चौरासी योनी भरमाया, तब तूने यह नरतन पाया,
यह तन से कुछ बना नहीं तो, माया मिलै न राम॥
कुछ दिन खेल्यो बनि के बालक, तरुणाई में तरुणी सेवक,
वृद्ध भयो तब पर्‌यो खाट पर, नहीं शान्ति का नाम॥
यह तन है बादल की छाया, नहिं कोई संग आय नहिं जाया,
जेहिं मुख राम नाम नहिं आवा, ताहि विधाता बाम॥
मधुर मनोहर नाम पुकारो, जीव मुसाफिर भव से तारो,
बिनु हरिचरण कमल दर्शन के, मन न लहै विश्राम॥
ये सब हैं स्वारथ के संगी, दुनिया की है चाल दुरंगी,
पुत्र पिता भ्राता अरुमाता, कोई न अइहैं काम॥

(43)

हरे राम हरे कृष्ण कहना नरतन का गहना यही है॥ टेक॥
काम क्रोध मद-मोह-लोभ में मगन हमेशा रहना—
जीव का फँसना यही है॥
ईर्ष्या-मान-बड़ाई बिसारो गहो सील सेवकाई—
संत का सहना यही है॥
सम सन्तोष ज्ञान मनि खोजो, तब भागे भ्रम भेद
वेद का कहना यही है।
स्वर्ग महीतल भोग बिसारो, हरि का नाम उचारो
सुखी से रहना यही है॥

(44)

लागइ नीकी रसना राम रस वाली॥ टेक॥

मधुर मनोहर नाम अमिय रस, प्रेम क प्याला भरा, न रहै खाली॥

नाम सुधाधार आये मुखन में, तब से छाइ आइ अधरन पै लाली॥

जब से पियइ लागी राम रस रसना, तबसे भुलाइ गयी चुगुली औ चाली॥

सोहर बाबा की ये प्यारी रसना, काल बली घेरे पियो हाली–हाली॥

(45)

किशोरी जी के योग्य श्याम वर बाँके॥ टेक॥

जैसे किशोरी मोरी गोरी कनक सी, ओइसइ श्याम नील मणि रंग राके॥

जैसे किशोरी कर कमल नाल इव, ओइसइ राम नाग सुण्ड वाले भुजाके॥

जैसे किशोरी संग सखी नवल रंगीली रंग, ओइसइ सुभग तन लखनलला के॥

सोहर बाबा युगल छवि न्यारी, धन्य जीव जो इनकी छवि झाँकि॥

(46)

जिनको राम नाम नहि भावत॥ टेक॥

तिनको तीन लोक की सम्पति, मिलेहु दरिद्र सतावत॥

श्वान समान फिरत जग भीतर, कल कतहूँ नहिं पावत॥

शोक रोग से ग्रसित रहत नित, तन त्रय ताप जलावत॥

सोहर बाबा राम नाम ते, चारि पदारथ पावत॥

कृष्ण-स्तुति

(47)

पार करेंगे नैया भज़ु श्री कृष्ण कन्हैया ॥ टेक ॥

अर्जुन प्यारे को रथ हाँके, साँवरिया गिरधारी बाँके

सुन्दर चतुर खेवइया ॥ भजु० ॥

ग्राह ले गज को गये जलधारे, आरत होइ गजराज पुकारे

धाये नाग नथइया ॥ भजु० ॥

विप्र सुदामा तन्दुल लाये, गले लपटि के भोग लगाये

कहि कहि भइया-भइया ॥ भजु० ॥

भरी सभा में द्रौपति रोइ, अबला के अवलम्ब न कोई

पहुँचे चीर बढ़इया ॥ भजु० ॥

सोहर बाबा अद्‌भुत करनी, चकित भये जब जाइ न बरनी

बाजत अनन्द बधइया ॥ भजु० ॥

(48)

नन्द जी के द्वारे पर बधइया बाजे बजना ॥ टेक ॥

कहें यशोदा रानी, लेहु सब मनमानी

राखू नाहीं बाजू बन्दा मुदरी ना कंगना ॥

करके श्रृंगार जाओ मिलि-जुलि साथ आओ

मोद भरि गाना गाओ नाचो मोरे अंगना ॥

नान्दी मुख श्राद्ध देखि, नन्द जी के भाग देखि

ग्वालिन के नाच देखि, सराहें देव ललना ॥

बचे नाँही देव शेष, आये धरि-धरि ग्वाल भेष,

महादेव गोपी बनि झुलावें श्याम पलना ॥

(49)

मथुरा के लइके जाइ मोरी पाती ॥ टेक ॥
जब से श्याम रहे गोकुल में, चरित किए बहु भाँती ॥
वहि जमुना वहि कुंज वृन्दावन, बिन हरि हमइ न सोहाती ॥
काह कहौं उर की मोर सजनी, नींद न आवइ राती ॥
अपुना त जाइ कुबजा संग रीझैं, समुझि-समुझि जरइ छाती ॥
सोहर बाबा श्याम बड़ छलिया, आखिर अहिर क जाती ॥

(50)

बांके बिहारी की बांकी छटा है ॥ टेक ॥
बाम भाग राधे दामिनि सी, श्याम सुभग सावन की घटा है ॥
राधे कल कपोल करि कुंचित, श्याम कपोलन काली लटा है ॥
राधे चन्द्रमुखी दृगखंजन, श्याम दृगन दल कमल छटा है ॥
राधे तन नीलाम्बर सारी, श्याम पीताम्बर तनिक हटा है ॥
अंग अनंग कोटि सत लाजत रति पति को अभिमान घटा है ॥
सोहर बाबा युगल झाँकी छवि, सोई झाँकत जो नाम रटा है ॥

(51)

मोर मुकुट वारे को कारे-कारे लट हैं ॥ टेक ॥
भौंहें कमान, बान तिलक सर सुधारे,
नयन रतनारे कारे काजल उपट हैं ॥
कल-कपोल कुण्डल अनमोल, बोलें मधुर-मधुर
लाले-लाले अधर बिम्ब फल से चटक हैं ॥
ठुमुक-ठुमुक चाल, चरन अहिफनन फनन,
सोहर बाबा निरखत निरत नागर नट हैं ॥

(52)

मिलेंगे कब श्याम सुन्दर सलोना॥ टेक॥
मृदु मुसुकात खात दधि आवत लिये करमें कल कदम्ब क दोना॥
श्रवण सुभग कुण्डल छवि-छाजै, सिर पर मुकुट-मनि सोना॥
पीताम्बर की कछनी काछे, नन्द यशोदा क छोना॥
लाले-लाले अधर पर वंशी सुहाये चितवन में भरे टोना॥
सोहर बाबा रूप लखि मोहिनी, प्रेम विवस पड़ा रोना॥

(53)

मोहन मोरि गलियाँ में आना सबेरे॥ टेक॥
सिर पर मुकुट धरे कर में मुरलिया,
मधुर तान बंशी बजाना सबेरे॥
मिसिरी मलाई ख़ाओ मीठी-मीठी राग गाओ,
पइयाँ लागौ दही न लुटाना सबेरे॥
जमुना जल भरि घड़ा सिर पै उठाइ देना,
खबरदार चीर न चुराना सबेरे॥
सोहर बाबा तन तरणि धारा में फंसि गये,
दया करके तीरे लगाना सबेरे॥

(54)

मुरली वाले मोहन मेरो मन हर लियो ॥ टेक ॥

मन चंचल सैलानी फिरत रह्यो, पकरि श्याम
चारु चरनों तल धरि दियो ॥

नयन बयन बस होके जग छवि में भूलि रह्यो, दृगन बीच
मुकुट लटकन को छवि भर दियो ॥

खाली रह्यो कान अपवाद स्वाद सुनत-सुनत, मधुर तान
मुरली का स्वर भर दियो ॥

नासिका सुगन्ध हेतु होइ अचेत सोचि रह्यो, कमल पद
पराग के सुगन्ध तर कर दियो ॥

ताप रूपी तीव्र तरणि तपत रह्यो तन बीच, स्वाती श्याम
घन घटा जल से उर भर दियो ॥

सोहर बाबा मुक्ति हेतु चाह रहे बार-बार, तव माया पकड़ि
ममता जंजीर भर दियो ॥

(55)

मोहन मोरि गलिया में, क्यों कर खड़े हो ॥ टेक ॥

बनि ठगहार ठगत दिन-दिन प्रति, जग ठगहारों में सबसे बड़े हो ॥

बांये हाथ गोवर्धन धारे, कोमल बदन में सबसे कड़े हो ॥

लाले-लाले अधरों पै वशंधरी वा, मधुरी रगिनियां में जादू भरे हो ॥

जा दिन से मोरी चीर चुरायो, वा दिन से नयनों में गड़े हो ॥

सोहर बाबा चाल अनोखी, चित्र चराचर चरन में जड़े हो ॥

(56)

मोहन मुकुट लटकन की बलिहारी॥ टेक॥
हीरन की ज्योति जड़ित हरित लालमनि अमोल,
बीच-बीच मोतिन लरि लागि बारी-बारी॥
कुंचित कच काले-काले कल कपोल ठौर-ठौर
मन्द-मन्द मृदुल मुसुकानि बनि न्यारी॥
भाल अति विशाल तिलक सर कमान भौहों पै
मन मतंग वीर द्दगन तीर मारि डारी।
जिन जन उर गगन चित्त चारु चन्द के समान,
जनम मरण भय से मुक्त विचरत सुखकारी॥

(57)

ललन तेरे बोलन की बलिहारी॥ टेक॥
तोतरि बचन हरत जन को मन, मोहत गोप कुमारी॥
चुम्बत अधर सुधारस पावत नाचत दै-दै तारी॥
चहुँ दिसि ग्वाल बीच में निरतत माखन चोर मुरारी॥
सुर ब्रह्मादि सुमन सुर बरसत, जन मन होत सुखारी॥

(58)

मोहन बंशी बजाव न, बंशी में जादू भरी बा॥ टेक॥
कौने कारीगरी से गढ़ी बा, वंशी की सुन्दरता बढ़ी बा
दुनउ पोरों की बारी, हरी मणियों से जड़ी बा॥
सोनन के तारन से रजी बा, मोतिन की लरी से सजी बा
हरि के कर कमलन से, लाल-लाल अधरों पै धरी बा॥
वंशी धुन कानों में पड़ी बा, देह की सुधि मन से टरी बा
गोकुल गली में प्रेम सरिता उमड़ी बा॥
गीता ज्ञान तत्वों से भरी बा, योग युक्ति मुक्ती की जड़ी बा,
ऋद्धि-सिद्धि की ढेरी, नन्द के द्वारे परी बा॥

(59)

मोहन श्याम सुन्दर सलोना बने हैं ॥ टेक ॥

बिन घनश्याम जगत की शोभा, जैसे व्यंजन अलोना बने हैं ॥

गोप सुता दधि छीनइ के कारण, खासा कदम के दोना बने हैं ॥

जनु युवती श्रृंगार के कारण, हार फटिक मनि सोना बने हैं ॥

चंचल मन के रिझावइ के कारण, पद नख जादू औ टोना बने हैं ॥

(60)

नटवर श्याम सलोना मोहन मोहिं मारि दियो टोना ॥ टेक ॥

रतनारे कारे कजरारे, भरे जादू दृगन के कोना ॥

कियो बेहाल लाल जसुदा के, चितै–चितै तिरछोना ॥

पुलकावलि छाइ आयी बदन में, प्रेम विवश परा रोना ॥

घूँघट के पट ओट किये रहे, तनिक खुला रहा कोना ॥

प्रेम विवश तन दशा बिसरि गयी, होइगा जवन रहा होना ॥

(61)

मुकुट को लटकन नैनन छाये ॥ टेक ॥

जिन अँखियन में दुनियाँ बसी रही, सोइ दृग बीच मोहन चलि आए ॥

जबसे श्याम बस्यो हमरे उर, मोहनिशा घनघोर न साए ॥

भ्रम बैताल ताप तन मिटि गये, श्यामल तन घन घटा घेरि आए ॥

कटि पट–पीत तड़ित इव चमक्यो, मृदु मुसुकानि सुधा बरसाए ॥

(62)

मुरारी मेरे सिर पै वो कर कब धरोगे॥ टेक॥
जिन कर गोवर्धन उठाइ गोप धेनु पाल्यो,
बोल्यो सुख से खड़े रहो अब न डरोगे॥ मुरारी० ॥ 1 ॥
जिन कर मंजारी बाल अनल ज्वाल जरत राख्यो,
बोले सुख से शयन करो अब न जरोगे॥ मुरारी० ॥ 2 ॥
जिन कर कराल नख विदार्‌यो उर हिरनाकुश
बोल्यो कर-कृपाण जन सर पै फिर धरोगे॥ मुरारी० ॥ 3 ॥
सोइ भुज विशाल है विराजमान ठौर-ठौर,
खल दल दुःख देत नाथ ई कब हरोगे॥ मुरारी० ॥ 4 ॥

(63)

सिर पर मुकुट कर में मुरली लिए आ रहे श्याम आली॥ टेक॥
कुंचित कच कपोल पर फहरत, अलिगन अवलि काली-काली॥
कटि केहरि हिय नख मृगपति युत मन्द-मन्द गज को चाली॥
दाड़िम दसन दीप्त दुति तीक्षण, अधरन पै अनुपम लाली॥
लटकन चलन ललन को निरखो, चली आवो हाली-हाली॥

(64)

बंशी वाले श्याम मोरी गलियां में आजा॥ टेक॥
मैं ग्वालिनी दही माखन लिये हूँ, रुचि-रुचि भोग लगाजा॥
काछे कछनिया ओढे कमरिया, ग्वाल साथ गइयां चराजा॥
क्रीट-मुकुट मकराकृत-कुण्डल, कल कपोल दरसाजा॥
मृदु मुसुकानि मोहनी मूरति, अनुपम झांकी दिखाजा॥
कल-कपोल लाले अधरन में, मधुर-मधुर स्वर सुना जा॥

(65)

बजन लागी श्याम पगु पैजनियाँ॥ टेक॥

कटि किंकिनि पग नूपुर राजति, सबद रसाल चाल ठुमुकनियाँ॥

लाले-लाले अधर पर शोभित मधुर-मधुर स्वर मुरली मोहिनियाँ॥

स्रवन सुभग कुण्डल कपोल सिर मोर मुकुट लटकनियाँ॥

सोहर बाबा सखा संग निरतत उत गोपी, राधे छवि खनियाँ॥

(66)

मूरख नर भज लो चरन मुरारी॥ टेक॥

अजर-अमर अविनाशी दाता, भक्तन के हितकारी॥

दीन दयाल जगत पितु माता, दुष्ट दलन बनवारी॥

बालापन सब खेलि गँवायो, गई जवानी सारी॥

वृद्ध भयो अबहूँ नहिं मुख सों बोलत कृष्ण मुरारी॥

ई तन धन सबही करि अर्पन, सुमिरो विपिन बिहारी॥

ये सब हैं बादल की छाया, तात-मात-सुत नारी॥

क्षण भर में ये सब उड़ि जइहीं जब अइहैं तेरी बारी॥

प्रभु भगतन को कष्ट निवारत शंख-चक्र-गदाधारी॥

(67)

गोबिन्द-गोबिन्द बोल मोरी रसना॥ टेक॥

मुख मन्दिर में मौन पड़ी क्यों, धीरे-धीरे अब डोल मोरी रसना॥

बनिजा रसना रसिक राम रस, मधुर-मधुर धुनि बोल मोरी रसना॥

मुहुर-मुहुर पियो प्रेम का प्याला, आला मिलेगा दृगखोल मोरी रसना॥

सोहर बाबा राम भजन बिना, खुलि जहीं सब पोल मोरी रसना॥

विविध भजन

(72)

न मानै विधि विपरीत देखात॥ टेक॥
कूट मसखरी करत आन की, कृष्ण कहत अलसात॥
विषयी जीव मोह मायावश, दुःख रोवत सुख हरषात॥
यह संसार मुसाफिर खाना, कोइ आवत कोइ जात॥
यम कर दूत नियरे नहिं आवत, जब चरणन लपटात॥

(73)

अबइ मन ई दुनियाँदारी में बाटइ॥ टेक॥
श्वान समान फिरत जग भीतर, द्वार-द्वार पर पत्तल चाटइ॥
अपुना खाइ सबेरे के बान्हइ, भूखा केउ आवइ घिउरि के डाटइ॥
झूठी मसखरी में मन बसा बा, भजन की दइयाँ साँप जनु काटइ॥
जनमत मरत दुःसह दुःख भोगत, तबउ ई पापी क छाती न फाटइ॥

(74)

ई दुनियाँ है बिरानी इहाँ पर मुसाफिर बसथें॥ टेक॥
कोई आवत कोई जात मिलथें कोई काम नशा में चूर बने मजबूर हँसथें॥
चौरासी लाख चट्टी बनी बा बीच-बीच ठगिनी का ठेठर सिनेमा में मन के लसथें॥
षट् ठगहार रैन दिन घेरे मोह निशा की अंधेरी गली बीच पूंजी झँसथें॥
कोई-कोई जोग जुगुति से जागत, नाम रतन अनमोल लिए कर में बिहँसथें॥

(75)

भजन में लगि जा सब दुःख भागे॥ टेक॥
सुमति सोहागिनि सोइ गइ गाफिल नाम शब्द सुनि के उठि जागै॥
नाम सुजस जल चलेउ श्रवण मग, उर उमगे अनुराग तड़ागे॥
तब मन अलि हरि चरन में लगिहीं षट् ठगहार मिलेंगे न आगे॥
नाम मोती हंस जनु चूँगे, स्वाद न जाने कामी बक कागे॥

(76)

बड़ा जउ बनब्य फेरि बन्हि जाव्य॥ टेक॥
बड़ा भये हनुमान बगइचा में, बन्हि गये अब कइसे फल खाब्य॥
दान से बड़ा भये राजा बलि, बन्हि गये कैसे सुरपुर जाव्य॥
नापत की दइयाँ बड़ा होइगै बावन, बन्हि गये खड़ा रह पछताव्य॥
तजिके बड़ाई तनिक बन नन्हाँ, माया जलिया से तू छुटि जाव्य॥
सोहर बाबा बड़ाई के कारण, यमपुर में ठोकर विविध विधि खाव्य॥

(77)

नाम शरण में आयेउँ हे हरि लाज बचाव॥ टेक॥
मैं अतिदीन तुम दीनबन्धु हो, कारण कवन दुराव॥
मोह महोदधि में डूबत हूँ, निज कर टेक लगाव॥
पर अपवाद रटत रसना नित, निज गुन गान कराव॥
भव भय व्याल ग्रसित व्याकुल हूँ, खगपति वेगि पठाव॥
सोहरबाबा मन मतंग को, ज्ञान क अंकुश लगाव॥

(78)

नाम है दीन प्यारे मुझ दीन को क्यों बिसारे॥ टेक॥
मैं अति दीन-मलीन खिन्न हूँ, बहे जात मोह धारे॥
तेहि पर राग ग्राह पद पकर्‌यो, हेरि हहरि हिय हारे॥
भवरेहे जल थल नहिं पावत, सिर पर शिला पाप भारे॥
तव चरणारबिन्द तरणी बिन, अवर न दूजो सहारे॥
सोहरबाबा भवतीर करो अब, पतितन दीन पियारे॥

(79)

दया कर दे मुझ दीन पर दीन प्यारे॥ टेक॥

भव कूप में मैं अंधेरे में घेरा हूं षट्रिपु शासन से संसय अपारे॥

दारा सुता सुत के ममता के तागों से, बंधा परा मोहमय कारागारे॥

चौरासी लाख योनी का कैदी हूँ, सहायक कोई मिले न हमारे॥

मैं हूँ तुम्हारा हमारे प्रभू हो तुम, फिर क्यों कमल कर न सर पर पसारे॥

सोहर बाबा मन ताप भयाकुल, चाहत चरण शरण का सहारे॥

(80)

बिनु हरि चरन शरन सुख नाहीं॥ टेक॥

जिन पग से प्रगटी सुर सरिता, शंकर जटा समाहीं॥

जिन पद परसि विभीषण सुखयुत, बसत लंक गढ़ माहीं॥

जिन पद से दण्डक बन पावन, फूलत फलत सराहीं॥

तेहिं पद हीन दीन यह जड़ जीव, फिरत दुखी जगमाँहीं॥

सोहर बाबा तीन पुर जेहिं पग, नापि लियो पल माहीं॥

(81)

भजन बिना होबे बैल बिराना॥ टेक॥

बड़े भाग्य से नरतन मिला बा, फेरि मिले न जात बाटे ठगाना॥

जौने माया में मोहा फिरत हो, बना बा अरे बनाना जादू का कारखाना॥

तन धन धाम कुटुम छुटि जइहैं, छुटे न अरे छुटे न पाप का खजाना॥

सोहरबाबा यहँ माया से हरि के, सुमिरि ले अरे सुमिर ले श्री भगवाना॥

(82)

इहाँ से अरे इहाँ से जाना होगा अकेला ॥ टेक ॥
जौने माया में मोहा पड़ा हो, बना बा अरे बना बा जग ई चौसर का खेला ॥
सारी सम्पत्ति इहीं छुटि जइहीं, चले न अरे चले न साथ एकउ अधेला ॥
कामिनि कंत क नाता छुटेंगे, छुटेंगे अरे छुटेंगे बारे भोले गदेला ॥
सोहर बाबा भगवान भजन बिन, नरक में अरे नरक में सहबे झमेला ॥

(83)

काहे श्वास रतन धन खोवत ॥ टेक ॥
नरतन सुभग खेत दीनो प्रभु, विषय बीज कस बोवत ॥
निज जस गुन गौरव नित गावत, पाप शिला उर गोवत ॥
पर अपवाद स्वाद निन्दारत, उदर भरे पर सोवत ॥
सोहर बाबा अवसर बीते कर मलि सिर धुनि रोवत ॥

(84)

हरि बिन को जानै जन मन को ॥ टेक ॥
जो जन निशि दिन हरि पद सुमिरत, भूलत न पल छन को ॥
मातु-पिता बनि तेहि जन कारण, पोसत जन के तन को ॥
सुख सम्पत्ति कर कमल लिए हरि, खोजि रहे मुनिगन को ॥
सोहर बाबा के चित चातक, चाहत स्वाती घन को ॥

(85)

अबइ हये भूला मन सैलानी ॥ टेक ॥
गर्भवास के कारागार में ईश्वर के सम्मुख भजन कबूला ॥
बाहर आय मोह में फँसि गये, विषय पालना में झूलि रहे झूला ॥
पहिरे किनारदार धोती धोवाइ क, दुलहिन के सारी संबुजरंग तूला ॥
धोखा खाव्य बहुत दुख पउव्य जमपुर में सहबे विविध बिधि सूला ॥
सोहर बाबा पुकार रहे द्वार-द्वार सत संगति सुख भक्ती क मूला ॥

(86)

मन तैं तो तनिक नहीं थिर रहता॥ टेक॥
छिन–छिन भ्रमत पवन इव निशिदिन, ज्यों सरिता जल बहता॥
जेहिं–जेहिं ठौर जात रस कारन, तहाँ निरस नाहीं रस रहता॥
एहिं भ्रम से चौरासी भरमत, जनम मरण दुःख सहता॥
सोहर बाबा बरजत थाक्यो, हरिपद कमल न गहता॥

(87)

हमारे मन संत समाज सोहात॥ टेक॥
वेद मंत्र स्तोत्र सुजस जल, श्रवन पुटन उर जात॥
दिव्य दृष्टि युग उर थल बिखरत, मोह निशा भगि जात॥
निज सरूप भाषत परिपूरण, शान्ति सुधारस खात॥
सोहर बाबा संत कृपा बिनु, कबहुँ न मन थिर तात॥

(88)

समय जा रहा है हरी को सुमिर लो॥ टेक॥
श्याम सरूप की झांकी महा छवि, खाली दृगन में मुदित मोद भर लो॥
निजकर से झूठे जगत को पलट दो, हरी का कमल पद उसी कर पकड़ लो॥
सतगुरु से सत् साबुन प्रगट करके, गंदे हृदय पट पै उरकर से मल लो॥
नाम सुधा रस रसना रसिक बनौ, फणि मणि की भाँति जबा बीच धर लो॥
हरि मूरति निज हृदय सुमति थल, राम सुजस निरमल जल भर लो॥

(89)

मेरी ओर कर दो दया की नजरिया॥ टेक॥
कर्म शुभा शुभ के घेरे में घेरि गये, जादूगरी की लगी बा बजरिया॥
माया की बजरिया जादू भरी परियाँ, बिचवइ में फटिगइ झीनी चदरिया॥
बड़े–बड़े बूड़े पता न पाये, जैसे बड़वानल में पड़ि गइ मछरिया॥
सोहरबाबा भँवर बीच पड़ि गये, लीजै बचाइ नाथ यहिं बेरिया॥

(९०)

चरण चित लाये जा मूढ़ अनारी ॥ टेक ॥

मृदुल मनोहर नाम हरी को, होकर प्रेम मगन गुन गाये जा ॥

अघ ओढ़त लजात कबहूँ नहिं, सम सन्तोष सुधारस खाये जा ॥

क्रूर कुसंग कुमति मति त्यागो, हर छन संत समाज में धाए जा ॥

परमारथ रथ चढ़ो सम्हर के, पर उपकार हार गले से लुटायेजा ॥

महामोह भव रोग मिटै तब, गुरुपद कमल रेनु अजमाये जा ॥

हरिमूरति के चरण सहारे, अति अपार भव सिन्धु थहायेजा ॥

(९१)

दिन-दिन दीनन लाज बचायो ॥ टेक ॥

दीन बन्धु दीनन के कारन, नाना रूप बनायो ॥

आयो धाय धेनु इव जगहित, बच्छ सरिस अपनायो ॥

ग्रसित गाह गजराज विकल ह्वै, आरत नाद सुनायो ॥

सुनि अवाज खगराज त्यागि, बृजराज बेगिहीं धायो ॥

मारि ग्राह गज मुक्त कियो तब, विरद बेद बुध गायो ॥

कहँ लगि कहौं प्रताप अमित, पतिनन निज धाम बसायो ॥

धरि करि केश घसीटि द्रौपदी, मध्य सभा जब लायो ॥

अबला विकल विलोकि त्रिलोकी नाथ चीर बनि आयो ॥

सोहर बाबा भव मग भटकत, ठौर कतहुँ नहिं पायो ॥

आयो शरण सबेर देर भँइ अब क्यों याद भुलायो ॥

(92)

दीन बन्धु दीनानाथ हमारी लाज तुम्हारे हाथ॥ टेक॥
जब-जब खलदल सुरन सतायो, तब तूँ नाना रूप बनायो,
गो द्विज देव धेनु हितकारी, आयो शक्ति सिया के साथ॥ 1॥
ग्राह जब गज पग पकरि पछाड़्यो, तब ओ आरत बैन पुकार्‌यो
आयो देर न लायो वेगि, ग्राह की ग्रीवा काटेउ माथ॥ 2॥
खैंचत दुष्ट दुशासन सारी, द्रुपदसुता ने सभा निहारी,
जोधा बड़े-बड़े धनुधारी बैठे सभी झुकाकर माथ॥ 3॥
बनि गये श्याम नील रंग सारी, सारी सभा में होइगै सारी,
सारी बीच द्रौपदी नारी, तारी बाजी सुरन के साथ॥ 4॥
जब प्रह्लाद को खम्भा बांधा, लइके खड्ग शीश पै साधा,
नरसिंह बनि नख उदर बिदारी, अद्‌भुत रूप धर्‌यो सुरनाथ॥ 5॥
सोहर बाबा करत पुकार कहाँ हो दीनन के रखवार,
राखो लाज हमारी हम गाते निशिवासर तब गुन गाथ॥ 6॥

(93)

हे मन तोता हरि का नाम रटन लगाये जाइये,
बिगड़ी हुई दशा जीवन की जगाये जाइये॥ टेक॥
सुमिरन करो राम औ सीता ये हैं सगे तुम्हारे मीता,
चित चंचल में अनुपम श्याम स्वरूप बसाये जाइये॥
तज दो मोह अंधेरी गलियाँ क्षण भंगुर जीवन की कलियाँ,
डलिया नेम से श्रद्धा सुमन सदा चढ़ाये जाइये॥
काम-क्रोध मोह की धार इसी में डूब रहा संसार,
अपार सिन्धु से अपनी नइया पार लगाये जाइये॥
सोहर बाबा कहत पुकार जो जाना चाहो भव से पार॥
तार ना टूटे स्वर से राम नाम गुन गाये जाइये॥

(94)

मन बनि जा बैरागी तज दुनियाँदारी का खेला॥ टेक॥
गुरु के समाज में जाइ पद सेव, तब गुरु बनाइ लेइहँइ चेला॥
देइके मंत्र मन निर्मल बनाइ देइहीं, छुटि जइहँइ सारा झमेला॥
महामोह फंदा छुटि जइहीं, हरिपुर चला जा अकेला॥
सोहर बाबा सत्य हरि सुमिरन, इ जग मिट्टी क ढेला॥

(95)

जब तक मन खिलाड़ी हरिशरण न गहोगे॥
तब तक जरा मरण का दुख द्वन्द्व ही सहोगे॥
चौरासी लाख जोनि–जेल झेलते रहोगे,
लम्बी सफर में आते जाते ही यूँ रहोगे॥
तृष्णा नदी की धारा लहरा रहीं तरंगे
मन तू कुरंग बनकर जलते ही यूँ रहोगे॥
सतसंग के सहारे ज्ञान शिखर जब चढ़ोगे,
भ्रम भेद दूर होकर विश्राम मन लहोगे॥
काया नगर से मुक्ती पा शून्य जब लहोगे
सोहर बाबा तभी तुम आवाच्य पद गहोगे॥

(96)

हरि सुमिरन करो हरदम दया निधि की दया होगी ॥ टेक ॥
दया निधि ने दया करके दिया है वास नरतन में,
पता नाहीं कि तन से जीव पंछी कब जुदा होगी ॥
अरे मन मूढ़ विषयों में फँसे क्यों श्वान सूकर सम,
समय धोखे में खोते हो अगाड़ी क्या दशा होगी ॥
गुरु सतसंग सेवा से परम सन्तोष धन होगा,
ज्ञान भक्ति रतन बिनु सुख-सुमति शान्ती नहीं होगी ॥
सोहर बाबा बम-बम बोल दिव्य दृष्टि हृदय मे ंखोल,
पोल उर गगन में वर ब्रह्म की जोती प्रबल होगी ॥

(97)

भगत को राखत लाज हरी ॥ टेक ॥
दास आस विश्वास रटत जग, सिर पर कमल धरी ॥
कियो याद प्रह्लाद भगत जब, नरसिंह रूप धरी ॥
ग्राह वक्रगति चक्र से काट्यो मुक्त गयंद करी ॥
खैंचत चीर दुःशासन, थाक्यो तनिक न तन उघरी ॥
सोहर बाबा पर केहिं कारण कृपा दृष्टि बिसरी ॥

(98)

हरि भज लो हरि भज लो हरि भजने का मौका है ॥ टेक ॥
मिला नरतन समझ लो मन यही सबसे अनोखा है ॥
भुलाया एक ईश्वर को यही जीवन में धोखा है ॥
अगम भव सिन्धु तरने को यह तन बेड़ा-नौका है ॥
सोहर बाबा का कहना मान भजन का पाया मौका है ॥
न भूलो नाम नाम का धार चक्रधारों से चोखा है ॥

तीर्थराज एवं गंगा स्तुति

(99)

तीरथराज पगु पै मैं बलि-बलि जाऊँ॥ टेक॥
सरस्वती यमुना तरंग गंग तीव्रधार,
धार के फुहार छटा पै मन लुभाऊँ॥
निरखि के षट्कूल धार ध्यान में निमग्न होत,
वट विटप के ऊपर छवि सुन्दर लखि पाऊँ॥
निरखि के वह बाल भाल बाल काले, विलुलित,
छवि कोटि चन्द छटा लट आनन पै पाऊँ॥
सो स्वरूप के समीप शोभित मुनि चिरंजीव,
पवन तनय सोय रहे कैसे जगाऊँ॥
सोहर बाबा तीर तिरबेनी सुरसंत जुटैं,
भरा हुआ चारों फल केहि विधि पाऊँ॥

(100)

तीरथ पति मगराजा कमल पद जै-जै॥ टेक॥
वेद सुयश गावत, पार न पावत, देवन के सिरताजा॥
पाप गयंद को मृगपति बधि हरि दे गति, गति सुनि के कौन अवाजा॥
दु:ख दरिद्र हरि हरि चरणों तक करि के दै दे भगति अनाजा॥
चार पदारथ खानी राजधानी, कहत बुध बानी बनी लूटहिं संत समाजा॥

(101)

तीरथ राज में जाना त हरि गुन गाना मगन मन॥ टेक॥
घर से निकसत परग परग पर, सुमिरत श्री भगवाना॥
पांच चोर हृदय में बसत हैं, काम क्रोध मोह मद माना॥
सदा सचेत रहो इन ठगों से नाहिं लूटि लेइहै खजाना॥
कर से दान नाम रसना से तब तिरबेनी नहाना॥
यहिं विधि जो तिरबेनी सेइहीं, ताहि मिलत भगवाना॥

(102)

चल तिरबेनी नहाइ आइ आली ॥ टेक ॥
दहिने हाथ में लोटा और धोती, बायें फूलन की डाली ॥
जनम-जनम के पाप कटतु हैं भगती मिले बड़ी हाली ॥
झाँकी अनोखी अजब जमुना की, धारा चली बा निराली ॥
चारि पदारथ खजाना भरा बा, ब्रंह्मा परोसें थाली ॥
सोहर बाबा जेवँत सुर नर मुनि, बुद्धि छाइ आई लाली ॥

(103)

माघ मकर के मेला हमार मन देखन करेला ॥ टेक ॥
बड़े-बड़े सेठ महाजन आइ गये, तम्बू तनाबा अलबेला ॥
बड़े-बड़े सन्त-महन्त चलि आए, साथ लिए बहु चेला ॥
कहुँ-कहुँ सन्त राम गुन गाँवइ, कतहूँ नचाँवैं गदेला ॥
दूध में पानी कथा मनमानी, मेला में बड़ी ठेली-ठेला ॥
सोहर बाबा सफल कइल जीवन, पैसउ न लागी अधेला ॥

(104)

श्री गंगा जी क धारा बना पाप काटइ क आरा ॥ टेक ॥
मोह विटप को काटि गिरावत, पल में लगत नहि वारा ॥
भक्ति स्वरूप धारि गंगा की, ज्ञान विराग करारा ॥
भव सागर को पार करन हित, नौका बनी मजेदारा ॥
भव रूपी रोग नसावइ के कारन, बनिग सुधा क धारा ॥
साठि हजार सगर सुत तारिके, जै जै करत पुकारा ॥
सुर संतन सुख देवइ बदे के, बहइ गंगजल धारा ॥

(105)

लहर तिरबेनी क लइल सबेरे॥ टेक॥

श्याम-श्वेत धारों से मोहक धुनिसुनि, सुर-मुनि तट पै रहैं सदा घेरे॥

झाँकी अनोखी अजब जमुना की, चोखी चमकं यम आवै न नेरे॥

तट पै बट बट पै एक बालक, कोटिकाम छवि चित्त चितेरे॥

पवन तनय चित चितय रहे छवि, जहँ सब संत हैं लीन बसेरे॥

सोहर बाबा समय फेरि न मिलिहीं, पीछे से काल बली बा खदेरे॥

(106)

विमल जल माधव त्रिवेनी की धारा॥ टेक॥

मज्जन करत प्रात जो सज्जन, पाप ताप तन मन से हारा॥

वट विश्वास अछयवट की छाया, बैठि अमित मुनि करत विचारा॥

रेती-सुपेती पलंगिया बिछीबा, सन्तन के कारन विधाता सँवारा॥

संतन चरन धूलि उड़ि गइ गगन में, जमपुर में जाइके पापिन के तारा॥

जो जन सेवँइ निर्मल मन से, पाप ताप भव से लागइ किनारा॥

सोहरबाबा तीरथ गुन गाइ-गाइ, जाइ-जाइ संतन के सम्मुख पुकारा॥

(107)

गाइ-गाइ गंगा नहा तू त जमपुर में मारी न जातू॥ टेक॥

जनम-जनम के पाप भरा तनु, गंगा के धारे बहा तू॥

मीरा की भाँति भजन जउ करतू, संतन्न बहुत सोहातू॥

गऊ, ब्राह्मण संतन के खियाइ क, बच्चत त तुहउँ खातू॥

सोहर बाबा क भजन रसीला, मन में धरे घर जातू॥

(113)

कब्जे में कर चुकी है, मन तोहि माया ठगिनियाँ॥ टेक॥
कर्म क डोरी जीव सब बांधे, काटत होइ-होइ नगिनियाँ॥
मन मतंग जिनि जाय मोह बन, बैठी बा चिन्ता बघिनियाँ॥
ऊपर से सुन्दर वेश बनाए, भीतर बा काम अगिनियाँ॥
सोहरबाबा अहं न छुटिहीं, जब तक न करव्य भजनियाँ॥

(114)

भूले हो मन दिवाना, दिनहिं दिन होत अबेरा॥ टेक॥
कालबली सबके सिर पै खड़े हैं, छुटि जइहैं एक दिन बसेरा॥
जाना परिहैं जरूरी इहाँ से, साथी मिले केउ न तेरा॥
मोह नदी की धारा अगम है, नाव मिलइ नहिं बेरा॥
बड़े-बड़े जोगी किनारे खड़े हैं, पार क जाना करेरा॥
राम भजन कइके पापी उतरि गये, सोहर बाबा हँए घेरा॥

(115)

बैरागी बनि जात्य त जमपुर में मारा न जात्य॥ टेक॥
पूड़ी मिठाई मलाई विसरत्य, सूखी भउरिया खात्य॥
कोठा अटारी पलंग तजि देत्य, भुइअँइ पड़ा रहि जात्य॥
नारि नयन सर वे बचि जात्य, पर धन देखि घिनात्य॥
यह जग जाल से जान छोड़उत्य, हरि के चरन लपटात्य॥
सोहर बाबा छोड़ि के सब कुछ, हरिके शरण चलि जात्य॥

(116)

भावै न राम भजनियाँ जेके बा जमपुर जाना॥ टेक॥
उनके त भाव थ नाटक-भड़ई, आल्हा विषय रस गाना॥
उनके त भाव थ झूठ-चुगुलई, निन्दा में भये दिवाना॥
काम क्रोध मद लोभ में माते, गलियन फिरत उताना॥
जब यमदण्ड सीस पर गिरिहीं, तब परिहीं पछिताना॥

(117)

भूले काया नगर में इहाँ न सगा तेरो कोई ॥ टेक ॥

सहवासी सब दूर खड़े हैं, जहाँ रवि–शशि उदय न होई ॥

मोह नगरिया की सांकरि गलियाँ, गाफिल भयो तुम सोई ॥

डाकू चोर तुमको ठगि लेइ गये, पारस मणि गयो खोई ॥

सोहरबाबा हाथ लगे फेरि, संत मिलन जब होई ॥

(118)

सम्हरि जाना इ ठगों की गली है ॥ टेक ॥

हो जा सम्हरि के खड़े न बढ़ो तुम, विषय रूपी आगे से आँधी चली है ॥

काम क्रोध लोभादि प्रबल ठग, ठगे हैं सभी को ये ऐसे छली हैं ॥

भागइ–चहव्य भगइ न पउव्य, युगल नयनों की भरे दो नली हैं ॥

सोहर बाबा सुनाइ रहे गाइ–गाइ, इनके आगे किसी की न चली है ॥

(119)

आइ गइ गवनवाँ क डोली, अनमोल मोर चोली धूमिल भइ ॥ टेक ॥

धूमिल चुनरिया न भावै हरी बा, चाहे रहइ कैसेउ सा धोली ॥

प्रेमरूपी सत्य साबुन से धोइ डाल, साबुन मिलै सत्य संतन की टोली ॥

करि सिंगार यार बांके सजन छवि, देख नयन पट खोली ॥

हरि के समीप पाप ताप तन छुटि जइहीं, जरे जइसे फागुन की होली ॥

(120)

बचाये चल गठरी ठग बाहें बइठा ॥ टेक ॥
छूरी कटारी बगल में छिपाये, होइके उतान चलइ मूँछ अइँठा ॥
न ठग आगे न ठग पाछे, न जाने कौने जतन तन में पइठा ॥
चारिउ ओर ठगन कर डेरा, लूटि लेइहैं पूँजी देखाइ के लुवइठा ॥
नाम रतन ठगहारों ने लेइ लिया कौने गुमाने चलत मग अइँठा ॥
ऊपर से तेल फुलेल लगाये, भीतर विषय भरा सूकर क गोइंठा ॥
सोहर बाबा शान्ति सुख मिलिहँइ, जब भासे हरि रूप अनूठा ॥

(121)

ठगिनियाँ से बचि जा तब हम जानी ॥ टेक ॥
ई ठगिनी लिहे ठग संग घूमत, काम क्रोध महा भट मानी ॥
बड़े-बड़े चतुरन क काटेसि गठरिया, बैठी गली में नयन सरतानी ॥
कामिनि कनक में बड़े-बड़े फंसि गये, जोगी जती मुनि ज्ञानी ॥
शिव सनकादि आदि मुनि नारद, बानर बनाइ क उतारि लिहेसि पानी ॥

(122)

दो दिन की जिन्दगानी सयानी तू राम-राम बोल ॥ टेक ॥
यह संसार बैर का काँटा, काँटा से बचि-बचि डोल ॥
निन्दा, चुगुलई, चतुरई बिसार, ताला कपट का खोल ॥
मीठी-मीठी बानी तू बोल सभी से, रस में विष जिनि घोल ॥
सास-ससुर से रार न ठान, सेवा से लइल मोल ॥
अपने श्याम के हार गले का, बनिजा रतन अनमोल ॥

(123)

मोह नगर मत जाना बना, जादू का कारखाना ॥ टेक ॥
ऊपर चाम चाम के भीतर, मज्जा रूधिर मल साना ॥
चाम चदरिया से सजी बा बजरिया, बड़े बड़े देखि लुभाना ॥
यह ठगिनी के सहायक बड़े बड़े, काम क्रोध मद माना ॥
यह ठगिनी से बचत कोई विरला, जेहि राखैं भगवाना ॥
सोहरबाबा ठगिनि से बचै जो, ताहि मिलैं भगवाना ॥

(124)

क्यों चल दिये हो अकेला, तुम्हें ख्याल है कि नहीं है ॥ टेक ॥
मत जा मत जा अंधेरी गली है, गलियों में जादू का खेला ॥
जादू भरी युवतियाँ जगत की, कर लेवेंगी तुम्हें चेला ॥
लेइ लेइहैं अनमोल रतन धन, छोड़िहैं न एकौ अधेला ॥
जाओ–जाओ न हमको बुझाओ, सच्चा गुरु का हूँ चेला ॥

(125)

मिलना चाहो श्याम से, सुन्दर सजो साज सजनी ॥ टेक ॥
सत की सारी शील क चोली, लेइल धरम मुँह पोंछनी ॥
नाम क गोंटा हृदय अंचल पट, त्रिगुन की धारा चमकनी ॥
साधन क घूँघरू बाँध पगन पै, दान दुनउ कर में कंगनी ॥
जोग की ज्योति जगाओ हृदय में, भागे महामोह रजनी ॥
प्रेम पलंग पौढ़ाओं हरी को, ठुमुकि चलो बाजै पैजनी ॥
श्याम स्वरूप सुमति संग बिहरै, कुमति से हटिगै बजनी ॥

(126)

अब जिनि नाथ भुलाव, कवनिउँ जतन अपनाव ॥ टेक ॥
मन अलिगन गये भूलि चरन तव, निज पद कमल बसाव ॥
नयन मीन विषय वारि में पड़ि गये, निज छवि जाल फँसाव ॥
त्रिविध ताप के ज्वाल जरत तनु, कृपावारि बरसाव ॥
अमित काल नाच्यो माया बस, अब जिनि नाथ नचाव ॥
श्याम घटा घनघोर गरजि के, मन बन मोर नचाव ॥

(127)

आइ गये मोर अनवइया, सुदिन हम जानइ न पायेऊँ ॥
सुमति सुहागिन सखी मोर भीतरँइ, बाहर कुमति संग धायेउँ ॥
धर्म-भ्रात से रूठी रहेउँ मैं, ठगवन से नेहियाँ लगायेउँ ॥
झीनी चदरिया विमल भइ मइली, श्याम नीलरंग न रँगायेंउँ ॥
संत सुजान सुनार मार से, भूषन न एकउ गढ़ायेंउँ ॥
सोहर बाबा जनम बहु बीति गये, नहिं भ्रम भेद मिटायेउँ ॥

(128)

आइ गये मोर अनवइया अबइ गुनवाँ एकउ न जाना ॥ टेक ॥
पाँच पचीस सखी मोरे संग की, सोइ गईं होइ ग बिहाना ॥
एकउ सिंगार न तन क बनावा, भूसन बसन भ पुराना ॥
पाप के भांडा में मोदक कपट क, विषय सिरा में साना ॥
माता-पिता घरवाँ से निकालइ, भेजइं देश बिराना ॥
सासु सुमति मोरि कुमति ननदिया, मारइ विरह क ताना ॥
परम सुजान श्याम के सम्मुख, लागइ न एकउ बहाना ॥
कपट कपाट उघारइ श्याम जब, तब हमके परिहैं लजाना ॥
रूठे सजन दुख पइव्य जगत में, लागे न कतहूँ ठिकाना ॥
सोहर बाबा से लइल ज्ञान-गुन, जौने मिलँइ मनमाना ॥

(129)

होइ गइ चलइ क जून मंजिल बड़ी लम्बी सफर है ॥ टेक ॥
घेरि आए मोह रूपी कारे कारे बदरा, बरसै विषय क बून ॥ मंजिल० ॥
साथी मुसाफिर अगाड़ी निकरि गये, काया नगर होइग सून ॥ मंजिल० ॥
आगे अपावनि नदी वैतरणी, धारा बहै पिउ अउ खून ॥ मंजिल० ॥
सोहर बाबा काल बली आइ गये, मिटइ न विधिक कानून ॥ मंजिल० ॥

(130)

नजरिया में झूठी बजरिया बसी बा ॥ टेक ॥
यह संसार असार सपन इव, तोर-मोर क फाँसी-फँसी बा ॥
मातु-पिता अरु बन्धु सहोदर, दारा सुता से सिनेमा लसी बा ॥
कोइ न मेरा-तेरा इहाँ पर, पाप के दल-दल में दुनियाँ धँसी बा ॥
सोहर बाबा विलोकइँ हरि छवि, संतन के हिय में सुमतियाँ हँसी बा ॥

(131)

चला आव श्याम सलोना लिए आव दोना कदम्ब का ॥
सुरभी गइया क दहिया खिअइबइ, माखन मिसिरी व लोना।
छीन दही जिनि फोर मटुकिया, नन्द बबा के छोना ॥
चीर चोरावन बानि बिसार, ई हौ लाज क खोना ॥
सोहर बाबा तिरछी चितवनि से, मारो न हनि--हनि टोना ॥

(132)

जुगुति बाटइ अनोखी हरि के रिझावइ बदे के॥ टेक॥
प्रेम भगति सेबरी से सीख, बन-बन बइरि बेरावइ,
हरि के खियाबइ बदे के॥
गावइ भजन मीरा से सीख, तब हरि सन्मुख अइहीं,
बंशी बजावइ बदे के॥
सहन तात अहिल्या से सीख, तब मुनि संग हरि अइहीं,
चरन छुआवइ बदे के॥
सच्ची तौल नरसी से सीख तब हरि धन बनि जइहीं,
हुण्डी चुकावइ बदे के॥

(133)

रसना रस भरी बानी हरि-हरि बोल सयानी॥ टेक॥
कटुक बचन कबहूँ जिनि बोल, इ हउवइ नरक निसानी॥
यहिं मुख की सुन्दरता यही है, राम भजन मीठी बानी॥
राम भजन और हरि गुण गाये से, भक्ति मिले सुखखानी॥
सुख सम्पत्ति परिवार बड़ाई, औरउ मिले रजधानी॥
मधुर बचन सुनि जग सब मोहत, राम भजन प्रिय बानी॥

(134)

बैरागी कैसे बनबे भोगों से मन न हटत बा॥ टेक॥
पूड़ी-मिठाई बहुत निक लागइ, दुनउ जून लड्डू बटत बा॥
रसना ओठ सजावइ के खातिर, पान सोपारी कटत बा॥
अब चित चेत कर मन मूरख, भगती से नाता कटत बा॥
सोहर बाबा विराग जोग बिनु, बल बुधि साधन घटत बा॥

(135)

दिवाना मन काहे को थिर न रहे॥ टेक॥
काल बली सिर सबके खड़े हैं, तेरा बसेरा इहाँ न रहे॥
जाना इहाँ से सभी को है एक दिन, साथी न साथ में कोई रहे॥
नदिया अजब वैतरणी एक है, पार करइ के न नाव रहे॥
पार क जाना कठिन है नदिया, बड़े-बड़े जोगी किनारे रहे॥
सोहर बाबा इहाँ बाटेनि घेरा, संत भजन करि उतरि रहे॥

(136)

प्रेम भरी बानी से गाव, बोलाव राम अइहँइ जरूरी॥ टेक॥
सेबरी ने बेरों पै राम को रिझाय लिया, सोई प्रेम तू दरसाव॥
जौने प्रेम से मीरा नाची, सोई तान तनिक सुनाव॥
जौने प्रेम गोपी श्याम को नचायो, सोइ प्रेम फंदा फँसाव॥
सोहर बाबा हरि रीझँइ तबइ जब, प्रेम मगन गुन गाव॥

(137)

सेबरी बेर धरे दोना, कबहुँ राम अइहँइ भवनवाँ॥ टेक॥
नन्हवइ से तजि दिहा माता-पिता के, सखिया सहेली सजनवाँ॥
ऋषि मतंग गुरु हमके बताइ गये, सुख मिलिहँइ राम के सरनवाँ॥
बैठि सघन वन बाट निहारइ, बीति गये तीनिउ पनवाँ॥
सोहरबाबा बसी उर में चिन्ता, दर्शन को प्यासे नयनवाँ॥

(138)

अबके गये कब अउव्य बताये जा ॥ टेक ॥
रानी सुनैना क सून किहे नगरी, अब कवने घरियाँ बसउव्य ॥
सबही क मन अपने चरनन में बांधि लिहे, इ तन कब अपनउव्य ॥
श्याम सूरति मेरे नैनों में बसि गइ, मिलव्य की तरसइव्य ॥
एक बेरी आये सिया जी के पाये, फेरि अउव्य त कुछु पउव्य ॥
सोहर बाबा विरह अगिनि लागी, मरव्य की प्राण बचउव्य ॥

(139)

मिथिला में लागल बा मेला, हमार मन देखन करेला ॥ टेक ॥
राजा जनक जी परन एक ठान्यो, हठ करि मन में धरेला ॥
देश–देश के राजा आए एकइ से एक अलबेला ॥
बड़े–बड़े भूपन क भुजबल थकि गा, धनुष न तिलभर टरेला ॥
पश्चिम दिशा से एक बाबा जी आये साथ लिए दुइ चेला ॥
राम–लखन सुकुमार–मनोहर, चेला बड़ा अलबेला ॥
रामचन्द्र जब धनुहाँ तोर्‌यो, सिया सुकुमारी वरेला ॥

(140)

वृन्दावन बिपिन विहारी, खबरि प्रभु लीजै हमारी ॥ टेक ॥
पाँचो पति दुर्गति में पड़िके हाय गये हमइ हारी ॥
अर्जुन भीम जुआ में हारे केउ नहिं रक्षाकारी ॥
लायो घसीटि दुःशासन पापी, चाहत करन उघारी ॥
खिसकि गयी है तन की सारी, नगन होत गिरधारी ॥
लेहु बचाइ बाल खेलत ज्यों, अन्तिम विनय हमारी ॥
जेहिकर से गजराज उबार्‌यो, सोइ भुज देहु पसारी ॥
तनिक विलम्ब अवर भइ मोहन, तब सत लूटैं अनारी ॥
कृष्ण–कृष्ण जब टेरी द्रौपदी, बढ़ि गइ तन की सारी ॥
खँइचत–खँइचत थक्यो दुःशासन, घटइ न दस गज सारी ॥
"सोहर बाबा" भजइ जे हरी केअइसइ ले थें उबारी ।

(142)

भूलत नाहीं मुसुकनियाँ मोहनियाँ ॥ टेक ॥
दुइ-दुइ दसन अधर अरुनारे, तोतरि-तोतरि बचनियाँ ॥
घुटुरुन चलत रेनु तनुमण्डित, मचलत मचलि-मचलि किलकनियाँ ॥
कुण्डल कल कपोल कच कुंचित, कमल नयन बाँकी चितवनियाँ ॥
सोहर बाबा महाछवि छाया, भगत जनन तन ताप हरनियाँ ॥

(143)

कैसे धरउँ मन में धीरा, हमार दुनउ हीरा निसरि गये ॥ टेक ॥
राम लखन सिया वन के सिधारे धइ-धइ भेष फकीरा ॥
पीताम्बर सिर मोर मुकुट तजि, पहिरे, वल्कल चीरा ॥
कुश-कंटक-कंकड़ी, कठिन मग, तेहि पर तपत समीरा ॥
अवध नृपति सुर धाम सिधारे, बहत नयन से नीरा ॥
पुरवासी प्रेम फाँसी में फँसि गये, छन-छन उठइ तन से पीरा ॥
भीतर विलपत माता कौशिल्या बहरे भरत भूप वीरा ॥
सोहर बाबा विधाता रिसाइ गये चलत न कछु ततबीरा ॥

(144)

हमके लगाइ दिहे टोना, किशोर गोर साँवरो सलोना ॥ टेक ॥
फुलवा लोढ़त फुल बगिया में देखेंउ हथवा में लिहे रहे दोना ॥ 1 ॥
तिरछी नजरिया चितये रघुनन्दन, लाज पड़ा सब खोना ॥ 2 ॥
घूँघट के पट ओट किए रहे, तनिक खुला रहा कोना ॥ 3 ॥
काह कहौं सखि होइ जो गई मैं, होइगा जवन रहा होना ॥ 4 ॥
सोहर बाबा सब विकल भई सखि, चल देखी भूप क छोना ॥ 5 ॥

(145)

फुल बगिया में आए चित चोर, किशोर वर बाँके सलोना ॥ टेक ॥
फुलवा लोढ़त फुल बगियाँ के भीतर लिहे कमल कर दोना ॥
भाल विशाल तिलक सिर सोहइ, जादू दृगन के कोना ॥
धनुष बाण कर कमल विराजत, है कोउ भूप के छोना ॥
होना रहा सो तुरतहिं होइगा, अबहीं अउर कुछ होना ॥ 4 ॥
सोहर बाबा दृगन के मग से, उर में बसी छवि लोना ॥

(146)

मति घबरा मोरे भाई तोहरउ आए बुढ़ाई ॥
बीता बचपन और किशोरा आइ गई तरुणाई ॥ तोहरउ० ॥
चालिस बरस उमर जब बितिहीं, तब भागे तरुणाई ॥ तोहरउ० ॥
अँखिया से जब राह न सूझिही डेगुरी होये ठेंघाई ॥ तो० ॥
दँतवा से जब दाना न फुटिहीं सेतुआ होये सनाई ॥ तोहरउ० ॥
सोहर बाबा लगे तन काँपन, करबे भजन कब भाई । ॥ तोह० ॥

(147)

होइग कलेवना क जून, अबइ दुनउ बारे न आये ॥ टेक ॥
भीतर रोवंइ कौशिल्या माता बहरे भरत दुःख दून ॥
बिन पनहीं अरु पैदे पाये, होइ गइ अजोधिया सून ॥
कौने वृक्षत्तर भीजत होइहीं, बरसइ सावन घन बून ॥
पान सोपारी खैर कहाँ पइहीं, कहँ लाची लवँगिया चून ॥
राम विरह बट बेलि सुखाइ गयीं, सरजू बहइ जनु सून ॥
होत सगुन मिलिहँइ दुनउँ बालक, फरकइ नयन कर कोन ॥

(148)

बाँकि द्दगन के कोना भरे श्याम है जादू-टोना॥ टेक॥
जिनके चितइ दिहें चारु चितवनियाँ, उनके बिसरि गये सोना॥
गलियाँ क गलियाँ टोना लगावँइ, नन्द, जसोदा के छोना॥
रक्षा के कारण जशोदा लगाइ दिहीं, माथे पे बाँका ढिठोना॥
उनके केउ टोना कइसे लगावइ, उ त टोनउ के मोहै ढिठोना॥

(149)

मन बनि जा बनजारा, बजार बड़ि बाँकी बनीबा॥ टेक॥
भूमि विछौना अकाश लगे तम्बू, रवि शशि अगणित तारा॥
ब्रह्मा जी गढ़ि दिहें बांका खिलौना माता-पिता-सुत-दारा॥
इहै खिलौना खेलत सुर-नरमुनि, देखँइ बइठि के तारा॥
सोहर बाबा सेवा कइके लेइल, ज्ञान भगति सुभ सारा॥

(150)

सुदिन दिन आइ गये जइबइ गवनवाँ॥ टेक॥
छुटि जइहीं नन्हवँइ क सखिया, श्याम पियारे हमारे विरनवाँ॥
माता-पिता से नाता टूटेंगे, छूटेगी सुन्दर अटारी भवनवाँ॥
तिरगुन की डोरी में चारि कहरवाँ, लम्बी सफर का होगा पयनवाँ॥
सोहर बाबा सफा कइ ल चादर, मिलि जइहीं श्याम सजनवाँ॥

(151)

ठगिनि ठगि लइ गइ बड़े-बड़े जोगी॥ टेक॥
नयनों के बान से शान बिगाड़ी, विषय भोगाइ के बनाइ दिहेसि रोगी॥
जो सीधे सादे साधु बेचारे, उन वपुरों की कवन गति होगी॥
सोहर बाबा अगम भव सागर, ई तन नइया कइसे पार होगी॥

(152)

मोर हीरा हेराइ गये हेरि रहे हैं॥ टेक॥
हीरा हेराने से व्याकुल पड़ा हूं, माला रैन दिन फेरि रहे हैं॥
दृष्टी परी गीता स्वामी की, उलटी राह से फेरि रहे हैं॥
हीरा निकारि दिये कर पर धरि आप अखण्ड बसेर रहे हैं॥
तनिक झलक मिली सोहर बाबा को, हृदय अंधेरा उजेर रहे हैं॥

(153)

(सन्दर्भ—स्वामी स्वरूपानन्द के अछवर स्थित अखण्डाश्रम पर कुआँ बैठ जाने से उसमें डूबकर मरे पिता की मृत्यु से दुःखी पुत्र को सान्त्वना देने के लिये लिखी गयी लचारी/दुर्घटना की सूचना मिलते ही सोहर बाबा तुरन्त पैदल पहुँचे। रात्रि निवास कर सदुपदेश दिया और यह पद्य लिखा—)

कूपइ में पिता तन त्यागे बनाइ गये हमके अभागे॥ टेक॥
गिरी दिवाल बिहाल भये तन, प्राण पखेरू उड़ि भागे॥
युक्ति एकउ बतावइ न पायेनि काल बली खड़ा आगे॥
भ अति शोर समूह जुटे जन, हाय हाय करि भागे॥
स्वामी स्वरूपानन्द सद्गुरु हमारे खाबइ कमाबइ आगे॥
'सोहर बाबा' करिहीं कृपा प्रभु विपति बयार न लागे॥

तुलसी पूजा

(154)

तुलसी मोरि महरानी विनय सुनिए मम बानी ॥ टेक ॥
हरी-हरी पाती हरी शिर पै धइके, पूजा करत मुनि ज्ञानी ॥
तव पतिव्रत प्रताप से तव पति, समर शंभु सन ठानी ॥
लड़त-लड़त शिव थकित भये, जब, तब विष्णू छल आनी ॥
पति गति देखि कुपित भई विन्दा, शाप से शिला नसानी ॥
तुलसी करि हरि धर्‍यो शीश पर ई गुन कइसे बखानी ॥

(155)

तुलसी पूजन जब करबू तबइ तोहसे मिलहँइ मुरारी ॥ टेक ॥
तुलसी पूजन के बहु सुख, बहुफल, जस गावैं श्रुति-चारी ॥
तुलसी पूजन कीन्हीं गोप कुमारी, पति पायिनि गिरधारी ॥
मिलिहँइ मुरारी त बहु सुख होइहीं, छुटि जइहीं यम के बेगारी ॥
सोहर बाबा तू भव तरि जाबू, देबू दुनंउ कुलवा तारी ॥

नहान

(156)

चल मोरी आली नहाइ आई सगरा ॥ टेक ॥
आगे सिया पाछे सखिया सयानी, गावत गीत चली सारी डगरा ॥
कोई गोरी कोइ श्याम वरन तन, नीलरंग सारी संबुज रंग चदरा ॥
विमल सलिल सर कमल खिलाने कूजत अलि पराग रस बिखरा ॥
मज्जन करि गयी गिरजा भवन में, भरि-भरि डाली फूलन क गजरा ॥
सोहर बाबा बिना शिव के पूजन, छूटे न जग ठगहारन से रगरा ॥

(157)

चली तिरबेनी नहाइ बदे गावइ न जानइ भजनियाँ॥ टेक॥

चोटी खोले, गोड़ में चप्पल, बनि गई छैल चिकनियाँ॥

गंगा में थूँकइ औ साबुन लगावइ, छोड़इ न जानै कुबनियाँ॥

रोजइ बजरिया में सौदा खरीदँइ, बनियन से बाजँइ बजनियाँ॥

सझवँइ से खाइ-खाइ सोवंइ महल में, खोइ रहीं जिनगनियाँ॥

सोहर बाबा बताइ रहे गाइ-गाइ, तरिजा तू कइके भजनियाँ॥

सामाजिक उपदेशात्मक

(158)

घरहीं में मन्दिर बनइबइ तीरथ हम घूमइ न जइबइ॥ टेक॥

सासू के गौरा ससुर जी के शंकर, पति जी के विष्णू बनइबइ॥

ननदा के दुर्गा जेठानी के तुलसा, देवरानी के देवी बनइबइ॥

देवर के अपने पुजारी बनइबइ, मन्दिर क साज सजइबइ॥

प्रेम सुमन मन माली से लइके, नेम की डाली भरइबइ॥

मीठी-मीठी बानी क घण्टी बजइबइ, ज्ञान क दीपक जलइबइ॥

पर उपकार क व्यंजन बनइबइ, सन्तन के धइ-धइ जेवंबइ॥

परम ब्रह्म के बालक बनाइके, गोदिया में लइके खेलइबइ॥

सोहर बाबा के भजन हितैषी, गाइ-गाइ जनम बनइबइ॥

कजली

(159)

अब हम जोगिनी बनि के चलबइ, मुरली वाले की गली ॥ टेक ॥
जैसे अलिगन फिरत मगन मन, कूजत कमलन की कली ॥
करव प्रतीतिप्रीति हरिपद सों, जग ठग से न जाब छली ॥
काम-क्रोध-मद-लोभ त्यागि के, भजबइ हरिपद भाँति भली ॥
मोर मुकुट मोहन मुरलीधर, संग राजत वृषभानु लली ॥

(160)

बचि के चल चुनरि चटकीली जौने दाग न लागे ना ॥ टेक ॥
अष्ट कमल दल चलत चरखवा पाँच तत्व गुन तीनी,
चाम चदरिया झीनी-बीनी पहिरत परम सुभागे ना ॥
यह चूनर अनमोल मोल न मिलिहीं हाट बजार,
तोरा परम प्रीतम जब रूठिहीं, टुटिहीं प्रेम के धागे ना ॥
राख समान सबुज रंग चूनरि पहिर प्रेम लगाई,
धरम उपकार दयाकर गोंटा पहिरत अति अनुरागे ना ॥
चूनरि पहिरि ओढ़ि के चादर चल पिया के पास,
साथ में नाम पहरूआ लेइल तब मग ठग न लागे ना ॥

(161)

मीरा मोहन से मिलने को जाय रही,
हरि गुन गाय रही ना ॥ टेक ॥
गर में तुलसी क माल भसम लेप किहे भाल,
नन्दलाल ललित छवि उर बसाय रही ॥ हरि० ॥
चलत मन्द-मद चाल, गीत गावत रसाल
राग वीणा के स्वर में मिलाय रही ॥ हरि० ॥
त्यागि दुनियाँ से राग, प्रेम कृष्ण चरण लाग
मन लुभान श्याम सुरति में विकाय रही ॥ हरि० ॥
कान कुण्डल अनमोल कल-कपोल मधुर बोल
लोल लोचन के कोर से लुभाय रही ॥ हरि० ॥

(162)

नाथ नइया न अपनी उड़न देबइ,
तोहइ न चढ़न देबइ ना ॥ टेक ॥
जादू भरी चरन धूरि कीर्ति रही भरपूर,
दूर खड़े रहो आगे न बढ़न देबइ ॥ तोहई० ॥
जाना चाहो जो पार मानो बैन हमार,
चरन धोउब दूसर जुगुति न पढ़न देबइ ॥ तोहई० ॥
पालूँ यहि से परिवार जानूँ और न कबार,
विपति जाल अपने शीश न मढ़न देबइ ॥ तोहई० ॥
प्रेम डोरी मेरे साथ बांधब चरन दुनउँ हाथ,
बँधि राखब दूसरि राह न कढ़न देबइ ॥ तोहई० ॥

(163)

राखो लाज हमारी चक्र सुदर्शनधारी रे हरी ॥ टेक ॥
दुष्ट दुःशासन द्रुपद सुता की चाहत चीर उधारी रामा,
तब हरि हरी-हरी बनि गये सबुज रंग सारी रे हरी ॥ 1 ॥
गज अरु ग्राह लड़े जल भीतर लड़त करत छलभारी रामा,
हे वृजराज कहत तुरतइ गजराज उबारी रे हरी ॥ 2 ॥
हिरनाकुश प्रभु भक्त पुत्र के सिर पर खड्ग संहारी रामा,
तब प्रभु नरसिंह रूप तनु तुरतै धारी रे हरी ॥ 3 ॥
जब जब भीर परी भगतन पर तब तब कीन गोहारी रामा,
भारत भूमि विकल भइ भूले कहाँ मुरारी रे हरी ॥ 4 ॥

(164)

जिनगी चली जात लट झारे राम भजन कब करव्य ना ॥ टेक ॥
काल कराल दाँत टेवत बा, कौने भाँति उबरव्य ना ॥
दाई-माई पुत्र-पतोहू इहइ कहे न तरव्य ना ॥
मोटी देह देखि मदमाते अढुकि कतहुँ गिरि परव्य ना ॥
अबकी बारी धोखा खाव्य, जीती बाजी हरव्य ना ॥

(165)

जाना परिहैं देश बेगाना कइसे लगे ठेकाना ना ॥ टेक ॥
बालापन हंसि खेलि गवाँय जवानी में चले उताना ना,
आइ बुढ़ाई लगे तन काँपन आपन भये बेगाना ना ॥ 1 ॥
तोर मोर में समय बीतिगा काल कवल नियराना ना,
न कुछ दान दिहे यहि कर से घर से भये रवाना ना ॥ 2 ॥
तीरथ ब्रत एकउ नहि किहल्य न सुमिरे श्री भगवाना ना,
न उपकार किहे यहि तन से सब दिन फिरे भुलाना ना ॥ 3 ॥
अब अनुराग जागु जीव जड़ यह जग सपन समाना ना,
जब यमदण्ड शीश पर परिहैं, करव्य कौन बहाना ना ॥ 4 ॥

(166)

हुलसी सुवन मानस पलना में झूलि रहे,
प्रेम मगन भूलि रहे ना ॥ टेक ॥
धर्म खम्भा मजबूत प्रेम डोरी अटूट,
तापर त्रिगुनी खटोला अनुकूल रहे ॥
अर्थ-धर्म-काम-मोक्ष चार पावा परोक्ष,
सुमति सुन्दरी साजि साज बरन तूल रहे ॥
झूलत संतन समाज जाको राम हैं सिरताज,
आठों याम राम नाम मधुर बोल रहे ॥
सज्जन अलि मन करत बास लेत भगति रस सुबास,
जीव जाँचत सो ईश सब कबूलि रहे ॥

(167)

विषय वासना में मन के वसाइ दिहे काम सब नसाइ दिहे ना॥ टेक॥
मिला नरतन अनमोल ऊपर पालिश तरे पोल ढोल के समान
गाल खुब बजाइ दिहे काम सब नसाइ दिहे ना॥ 1॥
गले माला सिर पै केश धरे जोगी क भेष देश आपन तू
असिला भुलाई दिहे काम सब नसाइ दिहे ना॥ 2॥
मोह गलियाँ में आइ मिले ठगिनी से जाइ ठग के साथ
मनी हाथ की गवाँइ दिहे काम सब नसाइ दिहे ना॥ 3॥
तोहके जाना भवपार बहत बाटइ मोह धार विषय वारि में
तन किश्ती डुबाइ दिहे काम सब नसाइ दिहे ना॥ 4॥

(168)

बिन हरि भजन श्याम न मिलिहीं भजिल कृष्ण मुरारी ना॥ टेक॥
पीताम्बर की कछनी काछे मोर मुकुट सिर धारी ना॥
लाले अधर मधुर धुनि मुरली, मोहत सुनि ब्रजनारी ना॥
भरी सभा में द्रौपदी पुकारी, बढ़ि गई तन की सारी ना॥
ग्रसित ग्राह गजराज पुकार्‌यो, तब तजि गरुण पधारी ना॥
मारि ग्राह गजराज उबार्‌यो, तब गज भयउ सुखारी ना॥
जब-जब भीर परी संतन पर, ऐसइ लीन उबारी ना॥

(169)

मुरली वाले मोहन कब मिलबे ओढ़े कारी कमरिया ना॥ टेक॥
श्याम स्वरूप मुकुट सिर सोहत, मोतियन लागि झलरिया ना॥
काले लट कपोल पर सोहत, बोलत बचन मधुरिया ना॥
भाल विशाल तिलक कल सोहै, जादुन भरी नजरिया ना॥
श्याम सुमिरि भव पार उतरि चल, लगे न एकउ दमड़िया ना॥
मुरली वाले मोहन मोहि तजि कस कुबजा भवन लुभाने ना॥ टेक॥

(170)

मुरलीवाले मोहन मोंहि तजि कस, कुब्जा भवन लुभाने ना ।। टेक॥
नाचे नाच सकल गोपिन संग, गिरिवर नख पर ताने ना॥
छीनि-छीनि दधि खाय लुटाय, लइके चीर पराने ना॥
किहे करार यार आवन का, काहे कवल भुलाने ना॥
काले की परतीति न कीजै, काले जहर के साने ना॥

(171)

लगिगै चोट चारू चितवन की, चित चातक चितवत घनश्याम॥ टेक॥
श्याम सुभग तन घन होइ गरजो, भक्त जनन के हेतु,
चातक चित स्वाती हित पइहै तब मन में होइ हैं विश्राम॥
मृदु मुसुकानि बान हनि मार्‍यो शिथिल भयो मन मोर
मुकुटमणि जड़ित ज्योति की झांकी, लाजत निरखि-निरखि रतिकाम॥
आनन चन्द्र आइ प्रगट्यो मनु हृदय गगन के बीच
कच घन घेरि रहे चहुँ ओर, सिर पर मोर पंख छवि धाम॥
मृदु मुसुकानि सुधा बरसावनि, चित्त चोरावन चारु
चाल ठुमुकन सोहर बाबा मूरित बसि गइ आठों याम॥

(172)

सेबरी बैर लिहे मग जोहत, राम कब घरवाँ अइहैं ना॥ टेक॥
रुचि-रुचि बैर-बेरावत धोवत, धरि दोना के बीच,
बैर बा थोरि मोर हरि भूँखे, कौने भांति अघइहैं ना॥
निसिबासर उठि पंथ निहारत, जैसे चन्द्र चकोर,
आनन चन्द सुधा किरणों से कब त्रय ताप नसइहैं ना॥
चित चातक चितवत तृषित है करुणा सिन्धु खरारि,
श्याम घन सुभग स्वाति जल बरसि बरसि कब बुन्द गिरइहैं ना॥
छिन-छिन छवि रविकुल कमलों के भानु रूप सुर भूप
दृगन कल कमल सुमन मन मोर, आलि कब पास बोलइहैं ना॥

(173)

मयना मधुर बचन मृदु बोलो सीताराम सबेरे ना॥ टेक॥
हे मन तोता तू जिनि भूल रटो सदा हरि नाम
काम-क्रोध-मोह भगि जइहैं तजि तनु भवन बसेरे ना॥ 1॥
अक्षर युगल जोग जुगुती से धरो हृदय में ध्यान
ज्ञान बैराग जोग जप जगिहिं, तब उर होइहीं उजेरे ना॥ 2॥
दान-दया-सम-शील-सत्य से, सब अइहीं एक साथ,
नाथ धनु हाँथ धरे सर सुन्दर छवि करिहैं उर डेरे ना॥ 3॥
परम शक्ति सुख निज स्वरूप का अनुभव परम अनूप
कूप भव बन्धन सब कटि जइहीं, चौरासी के फेरे ना॥ 4॥

(174)

रसना रस भरी बानी हरि हरि बोल सयानी ना॥ टेक॥
कटुक बचन कबहूँ जिनि बोल इ हउ नरक निशानी ना॥
यह मुँह क सुन्दरता यही है, राम भजन मीठी बानी ना॥
सुख सम्पत्ति परिवार बड़ाई, अउर मिले रजधानी ना॥
राम भजन अरु हरि गुन गाये से भगति मिलइ सुख खानी ना॥
हरिमूरति हरि भजन के बल से, मिलहैंइ सारंग पानी ना॥

(175)

आठोयाम राम नाम का पुकार करो भव से बेड़ा पार करो ना॥ टेक॥
खड्ग लइके कर ढाल, रन में लड़ो ललकार,
विजय कइके लइके भक्ती जय-जयकार करो॥ भव०॥
दुनियाँ है प्रभू की माया करो सबके ऊपर दाया
सबसे मिलिके चलो कोई से न खार करो॥ भव०॥
घुसे मन में ठग-चोर, निशा छाई घनघोर,
निशा नाम रूपी रवि से संहार करो॥ भव०॥
मिला नरतन अनमोल, बोलो सबसे मीठी बोल,
खोल कपट पट तू प्रीतम से दीदार करो॥ भव०॥

(176)

राम नाम वा अधार कलिकाल में फँसे तू कवने जाल में ना ॥ टेक ॥
योग-ज्ञान-बैराग सेन सहित गये भागि,
जाइ छिपे अली जइसे कमल नाल में ॥
राम नाम क प्रताप तन के मिटे पाप-ताप,
आप चला आव सीधा साधू चाल में ॥
भजो प्रेम से तूँ नाम पूरन होइहीं सब काम,
बात होये वही लिखा बा जो भाल में ॥
कर नाम पर विश्वास, गर से कटे मोहँ फाँस,
नाहीं परा रहव्य ऐसई काल गाल में ॥

(177)

लइल राम नाम लड्डू बिचात बा,
खूब खरीदा जात बा ना ॥ टेक ॥
लागे कौड़ी न दाम, आवइ दुनउ लोक काम
नाम लेत यम क दूत थरथरात बा खूब० ॥ 1 ॥
राम नाम का जो स्वाद, याद करते प्रह्लाद,
जेकर आज तलक झंडा फहरात बा खूब० ॥ 2 ॥
मीरा-सेबरी-सयानी, बनि गयीं राम रतन खानी,
जेकर कीर्ति रूपी सरिता-घहरात बा खूब० ॥ 3 ॥
जेकर बाटइ बड़ी भाग, ओकरे मोहें मीठ लाग,
ई अभागा पापी सुनि के परात बा खूब० ॥ 4 ॥

(178)

गिरिजा पूजन को जनक दुलारी चली,
संग सखी प्यारी चली ना ॥ टेक ॥
कोई गोरी श्याम रंग, तन में सारी सुरंग,
हंसगवनि अवनि मग पै, पगुधारी चली संग० ॥ 1 ॥
करत–मधुर–मधुर गान सुनि के छूटत मुनि ध्यान
कोकिल बयन सैन नैन करि कटारी चली संग० ॥ 2 ॥
कंकन नूपुर धुनि सोर राम चितवत तेहिं ओर
मंगल भरे कमल कर कनक की थारी चली संग० ॥ 3 ॥
टोली सुन्दर बनाइ सिया चली हरषाइ
राम मिलन हेतु मन से करि तयारी चली संग० ॥ 4 ॥

(179)

प्रेम श्याम सुन्दर से जोरि रहे जग से नाता तोरि रहे ना ॥ टेक ॥
सिर पै मुकुट गले माल, दाड़िम दसन अधर लाल,
नन्द–नन्दन दसन हँसन से अजोर रहे जग० ॥ 1 ॥
मधुर मुरली की तान गूँज रही दोनों कान
चाह यही सदा शब्द ये घनघोर रहे जग० ॥ 2 ॥
दही माखन के चोर अगर छीने मन मोर
नैन कमल कली में अली मन मोर रहे जग० ॥ 3 ॥
ई तन तरणि दे उबार डूब रही मझधार,
इ उपकार हार आपके निहोर रहे जग० ॥ 4 ॥

(180)

हे हरि हार गये अब तो इन चोरों से ठग बलातखोरों से ना॥ टेक॥
ये तो हैं बड़े बेपीर हनै बार-बार तीर,
किए विकल विषय पवन के झकोरों से ठग०॥ 1॥
काम क्रोध लोभ तीन लिए नाम रतन छीन,
विनय करके गये हारि इन कठोरों से ठग०॥ 2॥
घुसे तन भवन के बीच, कहा मानै न नीच,
खींच रहे अपनी ओर बड़े जोरों से ठग०॥ 3॥
मुझे जानि के अनाथ, फेरो सर के ऊपर हाँथ,
एक बार दो निहार नयन कोरों से ठग०॥ 4॥

(181)

सेबरी बेरों पै राम को रिझाय रही, द्वार पै बुलाय रही ना॥ टेक॥
बैठ पम्पा सर तीर भजन करत मति धीर
होइ अधीर नैन प्रेम जल गिराय रही द्वार०॥ 1॥
पीछे लखन आगे राम, चले सेबरी के धाम
धाय धरणि गिरी चरन सिर झुकाय रही द्वार०॥ 2॥
श्याम सुन्दर सुजान कर में लिए धनुष बान,
अंग कोटिन अनंग छवि छाय रही द्वार०॥ 3॥
सुभग आसन बिठाय, चरन धोवत हरषाय
बेर लाल-लाल अधर पै धराय रही द्वार०॥ 4॥
राम कहत निज जबान स्वाद मीठी महान
मति विदेह गेह स्वाद को भुलाय रही द्वार०॥ 5॥

(182)

सीताराम भजन बिन यमपुर एक दिन रोवइ के परी ॥ टेक ॥
चौरासी योनी में भरत पउव्य जनम अनेक
एक हरिभजन बिना सिर पाप क गठरी ढोवइ के परी ॥ 1 ॥
वैतरनी एक नदी बहतबा रूधिर पीव क धार
धार में भोड़िला बड़-बड़ कटिहीं तब तन टोवइ के परी ॥ 2 ॥
कुम्भी पाक पास में डरिहीं, मरिहीं विविध प्रकार
सहायक मिले न तोहके यमपुर अक्सर रोवइ के परी ॥ 3 ॥
तन मन भजन कर सोहर बाबा भव सागर से होइ जा पार
परम सुखधाम चल हरिधाम सदा सुख सोवइ के परी ॥ 4 ॥

(183)

हे प्रभु वृन्दा विपिन बिहारी राखो लाज हमारी ना ॥ टेक ॥
पाँचों पति दुर्गति में पड़ि के, हाय गये हमइ हारी ना ॥
अर्जुन भीम जुआ में हारे, कोउ नहिं रक्षा कारी ना ॥
लायो घसीटि दुःशासन पापी, चाहत करन उघारी ना ॥
खिसक गई है तन की सारी, नगन होत गिरधारी ना ॥
लेहु बचाइ बाल खेलत ज्यों, अन्तिम विनय विचारी ना ॥
तनिक विलम्ब अवर भई मोहन, तब सत लूटैं अनारी ना ॥
जेहिकर से गजराज उबार्‌यो, सोइभुज देहु पसारी ना ॥
कृष्ण-कृष्ण जब टेरी द्रौपदी बढ़ि गइ तन की सारी ना ॥
खैंचत--खैंचत भुजबल थकिगा, घटी न दस गज सारी ना ॥
सोहर बाबा प्रेम रहइ सच्चा त अइसइ लेत उबारी ना ॥

(184)

मिथिला शहर की सखियाँ अखियाँ, सफल बनावइ लागी ना॥ टेक॥

राजकुमार मार छवि श्यामल सुन्दर गौर शरीर,

वीर रणधीर धीर-धरि उर में सुरति बसावन लागी ना॥ 1॥

सिया बरन वर योग युवति जन-मन में करत विचार,

पूजि गिरिजा गौरी गिरीश गणपतिहिं मनावन लागी ना॥ 2॥

शिथिल सनेह मगन मन मन्दिर-मूरति धरिय बनाइ,

श्रद्धा सुमन सनेह नीर भरि-भरि बरसावन लागी ना॥ 3॥

सोहर बाबा राम रसिकता, कविता करि विस्तार

सुन्दरि नारि सलोनी राम मोहिनी गावन लागी ना॥ 4॥

(185)

धीरे-धीरे कर तयारी इहाँ से एक दिन जाना होगा ना॥ टेक॥

करऽ सदा सतसंग उमंग भक्ति सरिता की धार

मञ्जन करऽ मगन मन ज्ञान पंथ सुलझाना होगा ना॥ 1॥

सुमिरन करो नाम रसना से रटो सदा हरि नाम

काम-मद-क्रोध ठगन-ठगिनी को उर से भगाना होगा ना॥ 2॥

मातु-पिता-दारा कुटुम्ब ये सब स्वारथ के मीत

साथी-साथ न जइहीं अन्त समय पछताना होगा ना॥ 3॥

सोहर बाबा मिला यह नरतन सुन्दर रतन अमोल

कृपा के पवन झकोर से मोह के पटल उड़ाना होगा ना॥ 4॥

(186)

जाना बा मंजिल बड़ी दूर अरे मन जागो अनारी ना ॥ टेक ॥
मालिक क परवाना पहुँचि ग अवर कहरिया चारी ना ॥ 1 ॥
धूमिल भइ चादर मोरि झीनी, केहि विधि करब तयारी ना ॥ 2 ॥
दाग पुराना छूटत नाहीं, मलि-मलि धोवत हारी ना ॥ 3 ॥
साबुन मिलइ न निर्मल वारी, तेहि पर रजक अनारी ना ॥ 4 ॥
धूमिल पहिरि के फूहर भइलूँ लोगये कहत गवाँरी ना ॥ 5 ॥
कइसे मिलबइ श्याम सजन से, सत गुरु सुरति बिसारी ना ॥ 6 ॥
अब चित चेत करो वहिं दिन का जब तन छूटै तुम्हारी ना ॥ 7 ॥
सोहर बाबा राम भजन बिन विपति सकै को टारी ना ॥ 8 ॥

(187)

घनश्याम सूरति दृगन में बसावइ लागी,
मीरा भजन गावइ लागी ना ॥ टेक ॥
बहत नैना से नीर भीजै अलफी औ चीर,
भगी तन क पीर मन थिर बनावइ लागी मीरा० ॥ 1 ॥
झूमि-झूमि झमा-झम बाजै पैंजनि छमा-छम,
छन-छन छटा छवि तन सजावइ लागी मीरा० ॥ 2 ॥
करिके मीरा पै ख्याल, चले नन्द जू के लाल
उधर वंशी इधर नूपुर बजावइ लागी मीरा० ॥ 3 ॥
रूप अनुपम विलोकि दसउ द्वार विषय रोकि
सोहर बाबा सफल जीवन बनावइ लागी मीरा० ॥ 4 ॥

(188)

काहे चललिउ डगरिया अठिलानी हे
गुमानी ईजवानी न रहे ॥ टेक ॥
गले मोतियन क माल, दुनउ अधर लाल–लाल
बाएं गलवा पै तिल क निसानी हे गुमानी० ॥ 1 ॥
मंद–मंद मुसुकान, तिरछी चितवन की बान
जे निहारइ ओकर मौत नियरानी हे गुमानी० ॥ 2 ॥
चल धीर–धीरे चाल कभउँ मिलिहीं नन्दलाल
बोल राधेकृष्ण कोकिला की बानी हे गुमानी० ॥ 3 ॥
सोहर बाबा जोरे हाथ कर संतन क साथ
बनिजा मीराबाई भगति मनि की खानी हे गुमानी० ॥ 4 ॥

(189)

पर पुरुष के काटइ बदे न कटारी बन पतिव्रता नारी बन ना ॥ टेक ॥
अनुसुइया ने पति के सेवा, बालक बनाइ तीनों देवा
अपने भवन में झुलावइ पलना डारी वन पतिव्रता० ॥ 1 ॥
एक जलन्धर बलवान, समर शिव से करि महान
पतिव्रता बल से शिव न सकैं मारी बन पतिव्रता० ॥ 2 ॥
एक विप्र ब्रह्मचारी ओनकर पतिव्रता नारी
उसके भय से शिशु अनल न सकैं जारी वन पतिव्रता० ॥ 3 ॥
सोहर बाबा क ई कजरी सुन नर नारि सगरी
पतिव्रता जस गावैं वेदचारी वन पतिव्रता० ॥ 4 ॥

(190)

भूलत नाहिं राम मुसुकनियाँ, ठुमुकन चाल, मोहिनियाँ ना ॥ टेक ॥
घुटरुन चलत रेनु तन मण्डित, मचलि–मचलि किलकनियाँ ना ॥ 1 ॥
अंकुश कुलिश कमल की रेखा, देखा अवध की रनियाँ ना ॥ 2 ॥
दुइ–दुइ दशन अधर अरुनारे तोतरि, तोतरि बचनियाँ ना ॥ 3 ॥
विप्र चरन छतिया बिच लउके सो छवि सब सुख खनियाँ ना ॥ 4 ॥
सोहर बाबा छवि अव लोकत डमरू लिये शिव दनियाँ ना ॥ 5 ॥
देखत चरन मगन मन भइल जो भय ताप हरनियाँ ना ॥ 6 ॥

(191)

हमरी लागी लगन सावन में शंकर शिवदानी से ना॥ टेक॥
भाँग धतूर मदार से पूजित, बेलपात अरु पानी ना॥
हर-हर करत हरत हर भव-भय, दया-शील के खानी ना॥
डमरू बजावत गावत नाचत भूत-प्रेत लैसानी ना॥
रिधि-सिधि दोऊ चँवर डोलावत सेवत उमा भवानी ना॥
गरल कण्ठ उर-नर सिर माला, भाल चन्द्र छवि खानी ना॥
सिर पर जटा-जटा पर छटा-छटा पर गंग सोहानी ना॥
सोहर बाबा सुर मुनि पूजत, जती-सती विज्ञानी ना॥
विन शिव भजन भगति नहिं मिलिहीं, वेद पुरान बखानी ना॥

(192)

निरतत नाग फनन पर नटवर गावत राग मोहिनियाँ ना॥ टेक॥
हिर-फिर नाग नचावत नाचत थेई ता ता ठुमुकनियाँ ना॥
नूपुर धुनि सुनि लाजत काम कोकिला की किल्कनियाँ ना॥
कुण्डल कल कपोल कच-कुंचित मोर मुकुट लटकनियाँ ना॥
दाड़िम दसन अधर अरुनारे, कमल नयन चितवनियाँ ना॥
पीताम्बर वर गात विराजत, जनु घन छाये दमिनियाँ ना॥
लाले अधर ललित कर मुरली, मन्द मधुर मुसुकनियाँ ना॥
विप्र चरन छतिया बिच लउकत सो छवि की सुखखनियाँ ना॥
शिव जी डमरू बजावत नाचत, बनि गये जुगल नचनियाँ ना॥
सोहर बाबा विश्व विभूषण, बनि गये नाग नथनियाँ ना॥

(193)

ये दोउ राज किशोर सलोना, कोई सखि टोना न मारो ना ॥ टेक ॥
कौशिल्या के सुभग खिलौना, दशरथ, प्रान पियारो ना ॥
गौतम नारि तरी मिथिलापुर मुनि के साथ पधारो ना ॥
जनकपुरी की नारि नवेली, आपनि नजर संभारो ना ॥
इनके भाल ढिठोना लावो, राई नून से झारो ना ॥
रानी सुनैना कहत सिया से, इन पर तन मन वारो ना ॥
सोहर बाबा दृगन के मग से सब सखि उर बिच घारो ना ॥

(194)

मुरली वाले मोहन मोरे हृदय भवन में कब चलि अइव्य ना ॥ टेक ॥
सिर पर सोहत मोर पंख कमल नयन के बीच
तिलक की रेख अलेख निहारत दृगमग कब घुसि अइव्य ना ॥
श्रवण सुभग कुण्डल विशाल कल कलित ललित मृदुहास
हिय हँसि अमिय बरसि चंचल चकोर चित कब अन्हवइव्य ना ॥
सूक तुण्ड नासिका अग्र मुक्ता की छवि दुति श्वेत
लिए शिशु हंस़ भगत उर मान सरोवर कब हलि अइव्य ना ॥
क्रोध लोभ कन्दर्प सर्प सों लीजै मोहिं बचाइ
मोह निशि सोवत सुमति सुहागिन को, केहि भाँति जगइव्य ना ॥

(195)

धीरे-धीरे चल राह बा अटपट, झटपट कर तयारी ना ॥ टेक ॥
यह संसार सपन सम सम्पत्ति, मातु-पिता अरु नारी ना ॥
छन पल भर में सब छुटि जइहैं, तब अइहैं तेरी पारी ना ॥
शिवि, हरिश्चन्द्र, दधीचि, दिलीप, ये रहे सत्यब्रत धारी ना ॥
ये भी गये काल के गाल, ख्याल करि सोंच अनारी ना ॥
बालि बली सुग्रीव दैत्य, दानव भीषण छलकारी ना ॥
रावण कुम्भकरण घननाद, गये सब रन में मारी ना ॥
सोहर बाबा कहत सुनि समझ भारत के नर नारी ना ॥
सुमिरन करो राम सुख धाम कृष्ण गिरिवर गिरधारी ना ॥

(196)

जब–जब राम जनकपुर अइहैं, तब–तब नयन जुड़ैहै ना ॥ टेक ॥
श्यामल गौर किशोर चोर चित, तन मन मोर लुभैहैं ना ॥
कमल नयन मृदुबैन बोलिके, तन कर ताप बुझैहैं ना ॥
जो संजोग राम सिय बरिहैं, दिन-दिन जनक बुलैहैं ना ॥
अति सुकुमार कमलकर कोमल केहिं विधि धनुष उठैहैं ना ॥
यह अभिलाष हमारि मनोहर, सब त्रिपुरारि पुरैहैं ना ॥
दूलह भेष विलोकि राम को, सब सखि मोद बढ़ैहैं ना ॥
सोहर बाबा निरखि मगन मन, नये नये राग सुनैहैं ना ॥

(197)

हमरे गवने कसुदिनवा, लइके आए बभनवा ना ॥ टेक ॥
मातु पिता जानइ नहिं पायेनि, सुनिके कोपे विरनवा ना ॥
भाभी रोवँइ पकड़ि अँकवरिया, अँसुवा ढुरइ नयनवा ना ॥
नन्हवइ की मोरी सखी सहेली, मिलि जुलि आई अंगनवाँ ना ॥
जइबइ अगहन मास गवनवाँ, अइबइ लगत सवनवाँ ना ॥
ना पग में साधन क घुघुरु न कर में दान कंगनवाँ ना ॥
दया की मुदरी न अंगुरी में पहिना, न त्रिगुन की नाक नथुनियाँ ना ॥
सुघर सोनार बिछुड़ि गये सजनी, गढ़े न एकउ गहनवाँ ना ॥
गुरु सेवा क न माँग में सिन्दूर, न समता क सुरमा नयनवाँ ना ॥
सोहर बाबा कवन विधि मिलिहँइ, सुन्दर श्याम सजनवाँ ना ॥

(198)

धोबिया भइया मलि–मलि धोवऽ, मोरि धूमिल भई चुनरी ॥ टेक ॥
ई चूनर नइहर ना मिलिहँइ, मिलिहँइ सासुर नगरी ॥
नइहर दाग लगल चुनरी में, लोगवन कहिहँइ फूहरी ॥
सतकर साबुन प्रेम के जल से, धोव सतगुरु पोखरी ॥
चित कठोर पाहन पर पटक, मलि–मलि धोव हर घरी ॥
दाग पुराना जब छुटि जइहैं, होइहैं चूनर ऊजरी ॥
तोहके देव धोवाई भइया, अपने गले क सीकरी
तब हम पहिनि के सुन्दरि बनबइ, जइसे सुर–पुर की परी।
हँसि–हँसि मिलबइ श्याम सजन से, सोउबइ प्रीतम ओबरी ॥
सोहर बाबा मिले परम सुख, जब घूंघट पट उघरी ॥
रस–रस बरसे कारी बदरिया, भीजइ झीनी चूनरी ॥

(199)

सिया जी के जोग सुभग वर आए, सखि दोउ राज दुलारे ना ॥ टेक ॥
जइसे किशोरी मोरी गोरी कनक सी, राम नीलमणि प्यारे ना ॥
दामिनि वरन सिया तन की दुति, राम श्याम घन कारे ना ॥
सिय कर कमल नाल इव नाजुक, करतल अरु अरुनारे ना ॥
राम सुभग भुज नाग सुण्ड सम, जनु विधि हाथ सँवारे ना ॥
सिया दृगन मृग मीन दीन, सखि खंजन की छवि हारे ना ॥
राम विशाल कमल दल लोचन, ललित–ललित रतनारे ना ॥
सिया मगु चलत मराली चाल, पगन नूपुर झनकारे ना ॥
आवत राम अतुल बल युगल, मनहुँ गजराज पधारे ना ॥
सिया राम उपमा विचित्र लखि, सब मुनि गन मन हारे ना ॥
सोहर बाबा सुछवि यह पावत, गावत भये सुखारे ना ॥

(200)

सखि घनश्याम न आए भवनवा, लगि गये मास सवनवाँ ना॥ टेक॥
छाइ घटा घनघोर मोर वन लागे ढुरनवाँ ना ।। सखि०॥
गावन लगे रसिक गुन रसिक, रसिक जन झुलइ झुलनवाँ ना ।। सखि०॥
झिंगुरन की झनकार झननन, सननन चलत पवनवाँ ना ।। सखि०॥
भननन भनकि रहे कमलन पर, अलिगन नाना बरनवाँ ना ।। सखि०॥
बोलत कीर चकोर कोकिला, मधुर रंगनवाँ ना ।। सखि०॥
विलपत बृज बनिता बिनु श्याम, प्रेम जल भरे नयनवाँ ना ।। सखि०॥
सोहर बाबा मन हरि लइ गये, जसुमति नन्द ललनवाँ ना ।। सखि०॥
खोजत हरी-हरी कहि हरी, लतन में विविध विधनवाँ ना ।। सखि०॥

(201)

गंगा मइया से मंगबइ मंगनवा, दइ द हमइ ललनवाँ ना॥ टेक॥
कइद दुखिया पर ख्याल, दइ द गोदिया में लाल
ठुमुकि-ठुमुकि चलइ हमरे अंगनवाँ ना॥ दइद०॥
घूमी सगरो जहान लागा कतहूँ ना ठेकान
अन्त समय आयेउँ तोहरे शरनवा ना॥ दइद०॥
मास सावन सोमार, अउबइ तोहरे दुवार
गीत गाइ-गाइ बजउबइ बजनवाँ ना॥ दइद०॥
जौ न करबू ख्याल, अन्त होई उहइ हाल
तोहरे उपरा हम तजबइ परनवाँ ना॥ दइद०॥

(202)

चल सावन में गंगा नहाइ आई, हरिगुन गाइ आई ना ॥ टेक ॥
ऊपर गरजत घनघोर, नीचे नाचत वन मोर
सोर सावन सरोवर, छवि छाई आई ॥ हरि० ॥
फूल अक्षत औ पान, दूब दही दीप दान,
दान ब्राह्मण के कर में, लुटाइ आई ॥ हरिगुन० ॥
खड़ी रहो मेरी आली, लिए फूलन की थाली
हाली लइके चुनरिया घर से धाइ आई ॥ हरि० ॥
खड़ी रहो एक छन, हमरी गोदिया ललन
ई ललनवाँ पलनवाँ सोवाइ आई ॥ हरि० ॥
निरखि गंगा क धार पाप ताप होत छार
आपन बिगड़ल जनमवाँ बनाइ आई ॥ हरि० ॥
सोहर बाबा की कजरी गावँइ सुघर नारि सगरी
चल गाइ–गाइ गंगा थहाइ आई ॥ हरि० गुन० ॥

(203)

चल देखि आई बढ़ी गंग धार बा
सावन क बहार बा ना ॥ टेक ॥
पानी चला बड़ा जोर, होइग चारिउँ ओर शोर,
डूबि रहा दुनउ ओर क करार बा ॥ सावन० ॥
साथ सखियाँ दुइ–चार, गीत गावत मल्हार
सिर पै मोती गुहे गले बीच हार बा ॥ सावन० ॥
चीर–चोली बूटेदार, किये सोरहो सिंगार
कमर करधनी पग पैजनी झनकार वा ॥ सावन० ॥
कइके प्रेम से स्नान, देइके ब्राह्मण के दान
राम नाम नइया उतरइ के पार बा ॥ सावन० ॥
सोहर बाबा क गान, सखी गाव कहा मान
समझ भव से तोहार बेड़ा पार बा ॥ सावन० ॥

सोहर

(204)

सीताराम-सीताराम रामहिं राम सुमिरहु हो, राम वोहिं गाढ़े दिनवाँ
होइहँइ सहाइ ई शरीर जौने दिन छुटिहँइ हो॥ टेक॥
संघे-संघे न जइहीं सग भाई भगिनि महतारी तोहरी हो
सुत पित हित केउ न लगिहीं सहाइ ई शरीर जौने दिन छुटिहँई हो॥
लेइ चल लेइ चल सब करिहीं ठटरिया कसि-कसि बन्हिहँइ हो,
चारि काँधे धइके चलिहीं डगरिया नगर के लोग जुटिहँई हो॥
साजि चिता चित करि धरिहँईं अगिनि से मुहँवा जरिहँईं हो,
हिय तोर खोदना से खोदि-खोदि जरिही, हड़ावरि सिरक फोरिहँइ हो॥
ई जग धोखे क मेला जाना परिहीं अकेला सबके हो,
नेहिया राम से लगाव छल कपट, तजि, विपतियाँ में हरि मिलिहँई हो॥

(205)

मन तूँ त मोहि गइल माया की नगरिया—
डगरिया अब न मिलिहँइ हो॥ टेक॥
माया की लागलि बा बजरिया, ठगिनियाँ बैठी ठगइ बदे हो,
बड़े-बड़े चतुरन क कटलेसि गठरिया, अनारी का केउ बचिहँइ हो॥ 1॥
ब्रह्मा क भूली निपुनाई शिव सती क चतुराई भूली हो
नारद मुनि बानर बनिके नाचइ लागे माया में विहहवा के कारन
दुलिहिनऊ न पायेनि हो॥ 2 ॥
पांचइ तत्व की पुतरिया ई चाम क चदरिया ओढ़े हो,
तीन गुन की नथुनियाँ से दुनियाँ, बन्हीं बा भ्रम के कारण हो॥ 3॥
पुण्य सुकृत कलियाँ जौ खिलिहँइ त सतगुरु मिलिहँइ हो,
छन में छुटि जइहँइ माया क बन्धनवा, त जीव हरि से मिलिहँइ हो॥ 4॥

(206)

रसना रस भरी बोलिया तू बोलतिउ सबइक मनवाँ मोहतिउ हो ॥ टेक ॥

रामकृष्ण गुनवाँ गवतिउ गाइ क सुनवतिउ हो—
आपन विगड़ल जनमवां बनउतिउ दुनउँ कुलवा तरतिउ हो ॥ 1 ॥

निन्दा झुठाई चाली-चुगुली इ चटनी न चटतिउ हो
राम नाम रूपी मिश्री मलाई माखन कृष्ण नाउँ रटतिउ हो ॥ 2 ॥

रसना मिली बाटइ रस पियइ बदे, विष जिनि पियतिउ हो
राम नाम रूपी मोती अपने प्रेम रूपी धगवा में गुहतिउ हो ॥ 3 ॥

काम-क्रोध मद-मोह तजतिउ हरी क नउँआ भजतिउ हो
हरि के सम्मुख विहँसि-हँसि बइठतिउ सुन्दरि बनि के सोहतिउ हो ॥ 4 ॥

कामिनि काक बानी चित से तू तजतिउ रसीली बानी बोलतिउ हो
राम यश रूपी बगिया रसाल में कोकिलि बनि कुहुकतिउ हो ॥ 5 ॥

(207)

मीरा जी के हथवा में तुलसी क सुमिरिनी गोड़े में सोहै घूघुरु हो ॥ टेक ॥

घुघुरु पहिरि मीरा नाचइ रसीली भक्ती जाँचइ हो
बिन हरि भगति गती न हमरी होइहैं भगति कइसे मिलिहँइ हो ॥ 1 ॥

गरवाँ में अलफी भसम, तन मन से जोगिन बनिगइ हो
रगिया मोहिनी में मोहन गुनवाँ गाँवइ, मोहन केहि विधि मिलिहँइ हो ॥ 2 ॥

पहिरब न चीर चुनरिया चदरिया अब न ओढ़बइ हो,
गुदरी पहिरि गुन गुरु से अपने पूँछबइ कि राम केहि विधि मिलिहँइ हो ॥ 3 ॥

श्याम स्वरूप सिर पर मुकुट काने में दुनउ कुण्डल हो
लटकन चाल चला आव तूँ मुरारी, प्यारी छवि तोहरी देखबइ हो ॥ 4 ॥

लाले कर रतनारे नैना लाले, अधरन पर हो
मुरली धरे नाथ हाथ गहि अनाथ हमइ कब अपनउब्य हो ॥ 5 ॥

(208)

एक त ऊ कन्हैया बड़ सूघर ठुमुकि-ठुमुकि चलइ हो
बोलइ मधुरे बचन मुरली मधुरइ-मधुर धुनि बजावइ हो॥ टेक॥
गोड़े में सोनन कर घुघुरु जुलफी फुलेल चुबइ हो
नान्हीं-नान्हीं अखियाँ में कजरा क रेखा जसोदा मइया बनवँइ हो॥ 1॥
गालों पै काली-काली लटबा, लकुट कर काँधे कामरि हो
कछनी काँछे कटि पट पीत तड़ित इव अति छवि पावत हो॥ 2॥
काली नाग नाथे थेई ता ता थेई फन पर निरतत हो
नटनागर नागराज खगराज भैरव हरि जू नचावइ हो॥ 3॥
वंशी की तान कान में परी तन की सूरति बिसरि गई हो
गोकुला की गलियाँ-गलियाँ ग्वालिनी धावँइ जब हरि बंशी बजावँइ हो॥ 4॥
केउ सखि लइके कर में दर्पन केशिया सवाँरइ झारइ हो
के उसखी मथत दहिया अपने अंगनवाँ मथनियाँ तजि-तजि धावइँ हो॥ 5॥
वृन्दावन वट-वेलि, मोहिनि सखिया सहेलरि हो
गइये मोहिनि घसिया चरँइ न बछरुअन तजि-तजि धावँइ हो॥ 6॥
ब्रह्मा मोहेनि सुर-नर मुनि सब देखि मोहेनि हो,
एक नहि मोहेनि उहइ मोहन जवन मुरली अधर धरि बजावँइ हो॥ 7॥

(209)

सीता राम नाम रस पान कर जौने भव सागर तर हो,
तू त नहकइ जगत में भुलान्य इहाँ न केउ आपन हो॥ टेक॥
सुन्दर महल उठाइ लिह, गजरथ सजाइ लिह हो
जौने दिन चलने की होइहीं तयारी त मिलिहीं तीन गज कफ्फन हो॥ 1॥
सुन्दर देह सजाय तेल-फुलेल लाय हो,
सोइ तन तीरे सूखी लकड़ी के उपरा जराइ क लगिहीं तापन हो॥ 2॥
मातु-पिता-सुत नारी महल-धन अटारी सारी हो,
एत हयें सब जिउ के गले क जंजाल, इ फाँसी चाहे काटन हो॥ 3॥

(210)

गंगा जी से माँगे रहलिउ एतनँइ माँगन मोरि पुरइन हो—
हमरे गोदिया में भइले होरिलवा पूजन सुर-सरि-चलबई हो॥ टेक॥
सासु गोसइयाँ पइँया लागउँ अरज एतनी मनतिउ हो—
हमरे पुजवा क करतिउ तयारी त तुहँउ संगवा चलतिउ हो॥ 1॥
बसवाँ क डलिया विनउतिउ मालिनी बलउतिउ हो
चम्पा, गेंदा, कचनार, फुलवा लोढ़ि-लोढ़ि डलिया सजउतिउ हो॥ 2॥
लाल कमल कइ फुलवा, ललित कर से लोढ़तिउ हो
लाल रेशम पट क डोरवा, ललित हरवा गुहतिउ हो॥ 3॥
बाभन नेवति पठउतिउ गोतिनिन बलवतिउ हो
गावत सखिया सहेलरि संगवाँ चलतिनि, बाजन बरहउ बाजत हो॥ 4॥
कंचन थार कपूरन आरती उतरतिउ हो,
बाभनि पूजि-पूजि पियरी लुटवतिउ मनवती उपुरवतिउ हो॥ 5॥
रेशम क डोरवा मगवतिउ हरवा गुहवतिउ हो
बिच-बिच मोतियन लरी सी लगवतिउ त आरा-पार चढ़उति उहो॥ 6॥
विधिवत पूजन तब हम करबइ चरन सिर धरबइ हो—
जब-जब गोदियाँ में होइहैं होरिलवा, पूजन तब-तब अउबइ हो॥ 7॥

(211)

पुत्रवती युवती जग में सोई नारि सुन्दरि हो, जे करी गोदियाँ होरिल राम जनमें कुलवा क लायक हो॥ टेक॥
धनि धनि मातु अंजनी जहाँ हनुमत प्रगटे हो उनके जनमत अतुल बल बाल समय में बाल रवि लीलेउ हो॥ 1॥
धनि-धनि मातु सुमित्रा की गोदिया की छवि धनि हो—
जेकरी गोदियाँ लखन लाल भइलें, राम पद सेवक हो॥ 2॥
संत शिरोमणि गोस्वामी जी की माता रहीं हुलसी हो—
हुलसी की गोदियाँ में जनमें तुलसी, तुलसी रचे मानस हो॥ 3॥
अइसइ युवती जग में रहतिनि त कलिमल दहतिनि हो—
कहतीं हे हरि खेल मोरे अंगना त प्रभु सुनि अवतेनि हो॥ 4॥

(212)

सीता जी सुरसरि से विनवइ माँगन एक मांगइ हो
पूरन होइहिं हमरे मन क मनोरथ पूजन तोहरी करबइ हो ॥ टेक ॥
शंकर के सिर क विभूषन स्वर्ग विलासिनि हो—
पापी पतितन के तारइ बदे जग भबहत धार निरमल हो ॥1 ॥
देवर पति संग कुशल जउ वन से लवटबइ हों
बाभन गुरु-संत नेवति के पूजन तोहरी करबई हो ॥ 2 ॥
सुनत बचन गंगा हरषीं बिहँसि हँसि बोलिनि हो
हमके दिहू जग में बहुत बड़ाई, मांगन तोहरी पुरबइ हो ॥ 3 ॥
निशिचर विहीन मही होईहैं लखन राम जितिहँइ हो,
देवर-पति संग कुशल वन से अउबिउ, अचल जस होइहँइ हों ॥ 4 ॥

(213)

दूनउ लोक सुख चहतिउ त नेम इहइ गहतिउ हो—
कातिक तुलसी पूजन तेवई करतिउ संतति सुख पउतिउ हो ॥ टेक ॥
तुलसी क हरी-हरी पतिया गमागम गमकइ हो—
तुलसी वन में बसथें सीताराम अवर वीर हनुमत हो ॥ 1 ॥
तुलसी की माला पहिरइँ राम, कृष्ण बलदाऊ पहिरइँ हो—
तुलसीदल से बनथ जयमाल, तबइ छवि लागइ हो ॥ 2 ॥
तुलसी पूजन क बड़ फल वेद-बुध गाँवइ हो—
तुलसी दल बिना मेवा-पकवान, राम भोग न लगावँइ हो ॥ 3 ॥
चारिउँ ओरियाँ चउतरा त चउका पुरवतिउ हो
बारी-बारी फुलवन कलिया बिछवतिउ त वेदिया सजवतिउ हो ॥ 4 ॥
तुलसी पूजन सेबरी कइके राम गुन गावइ हो—
अपने हथवा से लाली-लाली बइरिया राम के खियावइ हो ॥ 5 ॥
लंका में भक्त विभीषण औरउ त्रिजटा जी पूजी हो—
ओनसे सीता मिलीं ओन्हँइ हनुमान भगति उर में बास गइ हो ॥ 6 ॥
गइया क दूध गंगा जल नई चुनरी चढ़वतिउ हो—
तुलसी चुनरी पहिरि हरि से मिलतिनि त तोहके मिलउतिनि हो ॥ 7 ॥
वन में पूजिनि सीता तुलसी असुर दल जीतिनि हो—
पति संग कुशल वन से लौटिनि पूजन कइके तुलसी क हो ॥ 8 ॥

(214)

नान्हें-नान्हें गोड़वा में नान्हइ-नान्ह पनहियाँ नान्हइ नान्ह घुघुरु हो॥ टेक॥
नान्हीं लकुटिया मुकुट नान्हें-नान्हीं-नान्हीं मणि जड़ी हो
नान्हें-नान्हें लटवन में नान्हीं नान्हीं ककहिया, लुटुरिया झारी नान्ही नान्हीं हो॥ 1॥
नान्हीं-नान्हीं बारी कान कुण्डल, कल कपोल नान्हे नान्हें हो
नान्हें-नान्हें दसन-नान्हीं-नान्हीं मुरलिया अधर पर सोहै नान्हें-नान्हें हो॥ 2॥
नान्हीं-नान्हीं अंगुरिन में, नान्हें-नान्हें नख ज्योति नान्हीं-नान्हीं हो—
नान्हीं सुमति चकोरी नान्हीं-नान्हीं अंखिया निहारइ रेखा बा नान्हें-नान्हें हो॥ 3॥
नान्हें-नान्हें हथवा में नान्हीं-नान्हीं दुपटिया खेलत गेंदवा नान्हें नान्हे हो—
नान्हीं-नान्हीं गलियां से नान्हें-नान्हें छोना नान्हीं-नान्हीं आरी चलइ हो॥ 4॥
नान्हें-नान्हें कदम नान्हीं-नान्हीं पाती दोनवा नान्हें-नान्हें हो,
नान्हीं-नान्हीं गोपी नान्हीं चुकुइया खियावँइ ग्वाल नान्हें-नान्हें हो॥ 5॥
नान्हइ कवि सोहर बाबा पद राग गाँवइ नान्हें-नान्हें हो—
नान्हें-नान्हें श्रोता सुनइ नान्हें-नान्हें कान, कन्हइया मिलइ नान्हें-नान्हें हो॥ 6॥

(215)

मोतियन लरी लागि हरि के मुकुट में,
जड़ित मनि मुनि मन मोहत हो॥ टेक॥
गुंजमाल गरहार केहरि कटि पीत-पट सोहत हो—
यज्ञोपवीत तार कनक श्याम तनु धारे धनु वासव इन सोहत हो॥ 1॥
कुंचित केश मधुकर छवि कवि कौने भाँति कहिहँइ हो—
जनु अहिगन गये शशि के समीप, सुधा के हित जोहत हो॥ 2॥
काम कमान भौंह पर तिलक भाल पटल दुति हो—
दामिनि वरन विराजत श्याम तन घन में, मदन जनु सर मारत हो॥ 3॥
चितवन चारु मार मद हरनी, बरनि नहि जाइ कहुं हो—
लखि के चकोरी मोरी भोरी भइ सुमतिया सुरतिया में मन पोहत हो॥ 4॥
कुण्डल कान कपोल बोल मृदु मधु माधुरि हो—
लाले-लाले कमल की कली में काले काले अलिगन युग दृगन में सोहत हो॥ 5॥

(216)

हमरे लागल वा ललनवां के टोनवां बोलाए नाहीं बोलइ हो ॥ टेक ॥
कवन टोनहिनी लगावल टोनवाँ कि दुधवा न घोंटइ हो—
उनके छाये वा नयनवाँ निदरिया, पलकिया न खोलइ हो ॥ 1 ॥
गोदिया से मचलि बेकँइंया–वेकँइयां खेलत रहलेनि हो—
आजु बड़ भोरवँइ से पौढ़ल पलनवां अँगनवां न डोलइ हो ॥ 2 ॥
गुरुजन आए बोलाइ के त नोना लागी टोना झारइँ हो—
टोनवाँ छुटतइ चिहुकि मइया–मइया मोहन बोलइ लागेनि हो ॥ 3 ॥
झट–पट पकरि क गोदिया अँचरवा से पोछइँ मुँहवाँ हो
चूमन लागिनि ललित अधरवा और कलित कपोलन हो ॥ 4 ॥

(217)

सेबरी खेलत अपने सखियन के साथ त हँसि–हँसि पूछत हो ॥ टेक ॥
भीतर गनपति क होत बाटइ पूजन दुआरे बाजइ बाजन हो—
बहुतक भेंड़ा बकरा बान्हल मोरे दुअरवाँ सखी कौने कारन हो ॥ 1 ॥
ब्याहे के तोरे शुभ दिनवाँ ये होइही बलिदान सब हो—
एनके अमिखन क बने जेवनार बराती सब जेइहँइ हो ॥ 2 ॥
सेबरी क खुलि ग इ ज्ञान गुनइ अपने मन लागिनि हो—
हमरे एकइ जिया सुख के कारन सकल मारा जइहीं गतिन हमरी होइँहइ हो ॥ 3 ॥
करबइ न आपन विवाह विपिन बसि रहबइ हो—
वन में करबइ राम क भजनियाँ तबइ गति होइहँइ हो ॥ 4 ॥
भागि गइ भिलनी गहन वन में जहाँ सब मुनिजन हो—
सेबरी गिरि गइ मुनि के चरन पर शरन तोहरे आइउँ हो ॥ 5 ॥
राम मंत्र गुरु दइके उपदेश बहुविध कीन्हेउ हो—
सुमिरन करहु सोहर बाबा राम तब मिलिहँइ हो ॥ 6 ॥

(218)

जसोदा बरज तू आपन कन्हइया दहिया हमरी लूटइ हो ॥ टेक ॥
दधि-मोरी खायेनि लुटाएनि मथनिया पोवारेन फोरेनि हो
नित-नित कहाँ जाबइ मथनी बेसाहइ कन्हइया आपन बरजऊ हो ॥ 1 ॥
अबहीं गोदिया खेलत नाजुक मोर बलकवा लगावइ आवत चोरी हो।
सूतल देख्यों हम पलनवाँ ललनवाँ भवन अपने, तबसे कब पहुँचेनि तोहरी गली,
लेइके आइउ ओरहन हो ॥ 2 ॥
बतिया सुनत चली सखिया रुठलि रुठलि बोली बोलै हो
मोहन अइहै गलिन में धरि बाँधव छोड़ावइ अइबू त पूछब हो ॥ 3 ॥
ग्वालिनि मोहीं श्याम मूरति पै, सुरतिया न भूलइ हो
मोहन बंधि गइले प्रेम की जंजीरिया जंजीरियउ न टूटइ हो ॥ 4 ॥
भोर होत लोह लागत लाल ग्वाल लइ गली गयेनि हो
एक सखि सिकहर ऊँचे धरि बाँधी मथनियाँ उहीं के हरि भवन गयेनि हो ॥ 5 ॥
एक ग्वाल बेकइयाँ दूसर भघोड़इयाँ खड़ा हो
तेकरे ऊपरा मोहन माखन क मुटुकिया उतारि लइके भागेनि हो ॥ 6 ॥

(219)

जेकरी गोदिया में कन्या जनम लिही उहइ गोदिया पावनि हो ॥ टेक ॥
राजा हिमान्चल के रानी मैना गोदिया में गौरी आइन हो—
उनकर सुयश चला चारिउ ओरिया त शिव जी आयेनि ब्याहन हो ॥ 1 ॥
राजा जनक के सुनैना रानी गोदिया में सीता विलसइँ हो—
उनके आंगन में राम भये दुलहा, सिया जी बनी दुलहिनि हो ॥ 2 ॥
राणा के भवन आइनि मीरा भगति जग में छाइ गई हो—
ओनसे मोहन मिले मुरली बजावत दुनउ कुल पावन हो ॥ 3 ॥
मोतीलाल के स्वरूपारानी गोदिया जवाहिर लाल हो
जेकरि बिटिया रहीं इन्दिरा गाँधी, इहाँ पै सुराज किहीं हो ॥ 4 ॥
सोहर बाबा गावैं सोहर सुनि-सुनि जनता मगन भई हो
अब हम बिटियउ के भये गउबइ सोहर ये ललनउँ से नोहर हो ॥ 5 ॥

(220)

ठुमुकि-ठुमुकि चलइँ घुटुरुन अंगनवां सोहावन लागइ हो—
रानी तोहरा ललनवाँ सोहावन लागइ हो ॥ टेक ॥
दुइ-दुइ दसन अधर लाले-लाले गाल, काले
कच मानों अलिगनवाँ सोहावन लागई हो ॥ 1 ॥
करत प्रमोद विनोद गोद शिशु गोरे-गोरे हो
युग श्याम बरनवाँ सोहावन लागइ हो ॥ 2 ॥
तोतरि बानी रतनारे चितवनियाँ में हो—
जादू टोना अनखनवाँ सोहावन लागइ हो ॥ 3 ॥
अतुलित छवि कवि बरनत हारे हरिहरानन्द हो
किमि करइँ कथनवाँ सोहावन लागे हो ॥ 4 ॥

क्षेपक

(221)

देवकी दुःख भरी खड़ी विसूलइ नैन जल ढूरइ हो ॥ टेक ॥
की तोर माता रिसानी की कंत निरादर कीन्हें हो—
सखी कौन संकट तोहि परिग यमुना तीरे सोचत हो ॥ 1 ॥
न मोर माता रिसानी न कन्त मोर निरादर कीन्हें हो
कंस विरन कुपित भये हम पर इहइ दुःख दारुन हो ॥ 2 ॥
सात बालक कंस मारेनि छतिया बजर भई हो
अठयें गरभ क समइया आइल संकट कइसे मिटिहँइ हो ॥ 3 ॥
तोहरा गरभ और मोरे एकइ समय एकइ तिथि होइइँइ हो
तोहरी गोदिया में अइहीं ललनवाँ पलनवा कइके देबइ हो ॥ 4 ॥
कहत-सुनत-निज-निज घर गई, समय जब वह आइल हो—
बसुदेव-देवकी परि गये जेल पायन पड़ि गइ बेड़ी हो ॥ 5 ॥

भादों बदी तिथि अष्टमी, नखत ऊ आइल हो—
देवकी की गोदियाँ गोविन्द बनि बालक मधुर मंद बिहँसइँ हो ॥ 6 ॥
अनुपम बालक देवकी देखि-देखि मन में मगन भई हो—
कर जोरि-जोरि पति से मनावँइ ई विनती सुनावँइ हो ॥ 7 ॥
अइसन बालक स्वामी देव जब कंस पापी मरिहँइ हो—
तुरतइ तजि देबइ अपनउ परनवाँ दिदरिया न होइहँइ हों ॥ 8 ॥
बालक लइजा स्वामी गोकुल यशोदा जी के आंगन हो—
तब मोरे लालन क बचिहँइ परनवाँ तबइ सुख मिलिहँइ हो ॥ 9 ॥
हाथे गोड़े क कटिगइ जंजीरिया, पहरू सब सोइ गये हों—
फाटक खुलिगा गोदी में बसुदेव मोहन के लइके गइलन हो ॥ 10 ॥
भादौं क बिजुरी चमकइ गगन घन गरजइ हो—
उपरा शेष सहस फन छाये भीजँइ न जौने मोहन हो ॥ 11 ॥
यमुना पांव धरेनि बसुदेव बहुत बढ़ि आइनि हो—
श्याम चरन छुवत भँई उथल उतरि गये गोकुल हो ॥ 12 ॥
कन्या के गोदिया उठायेनि मोहन पौढ़ाइ दिहेनि हो—
बसुदेव कन्या लेइके आयेनि जेल त पड़ि गइ बेड़ी हो ॥ 13 ॥
फाटक बंद जागे सब पहरू-रूदन धुनि कंस काने परी हो
पापी धाइ जेहल चलि आइल, गोदी में कन्या देखइ हो ॥ 14 ॥
पंडित जोतिषी बलाइ क कहइ तू कह्य जनमें बालक हो
इहाँ कन्या लिहेबा अवतार झूठि काहे भाखेउ हो ॥ 15 ॥
पंडित पत्रा विचारि-विचारि क फल कंस के सुनावँइ हो—
बचइ न पउव्य तीनउ लोक में कंस ऊ पुरुष गोकुल जनमेउ हो ॥ 16 ॥

एकता—देशभक्ति

(222)

गाँधी जी गये राज लइके जवाहिर लाल के दइके हो—
सोचइ चाहे भारत जनता स्वतंत्र कौने विधि होइहँइ हो ॥ टेक ॥
जब तकि चारों बरन निज-निज धरम न सम्हरिहँइ हो—
तब तकि जनता में एकता न फइले सुमति सुख न होइहँइ हो ॥ 1 ॥
धरम बिना न दया होइहिं, दया बिना न क्रोध मिटे हो—
क्रोधी-कामी-क्रूर चुगुल जब तक बढ़िहीं, विपति बीज बोइहँइ ॥ 2 ॥
घूस-व्याधि बढ़ि गइ जग में प्रभू जी अब सम्हारउ हो—
इ असाधि व्याधि जग से न जइहीं, सुखी केउ कइसे होइहँइ हो ॥ 3 ॥
जब तकि गइये मारी जइहीं खाइ वाले न नसइहँइ हो
तब तकि देव न समय से बरसिहैं सुखी केउ कैसे होइहँइ हो ॥ 4 ॥
गाँधी स्वराज्य सब खद्दर में, दया उर में धारे हो—
दया-धरम-धरणी माता क सिंगार, तबई सुख होइहँइ हो ॥ 5 ॥

गारी

(223)

कइसे गारी तोहइ हम देई रसिया राम लला॥ टेक॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव रसिया रामलला॥ 1॥

त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वम् मम देव-देव, रसिया रामलला॥ 2॥

एक तो श्याम सुरति मन भावन, मन हमरो लियो मोहि, रसिया रामलला॥ 3॥

तेहि पर मेरे सगे तुम पाहुंन, बढ़ी तुम्हहीं पर प्रीति, रसिया रामलला॥ 4॥

अचरज हम एक औरउ सुनीथ, तोहरे अवध के धाम, रसिया रासलला॥ 5॥

खीर खाइ सुत पैदा कर थीं, पति से किछु न काम, रसिया रामलला॥ 6॥

सुनि मुसुकाइ कहत रघुनन्दन तूँ, तउ बड़ी सयानि, रसिया रामलला॥ 7॥

आपन चाल छिपावत बहु विधि, कहत आन की कानि, रसिया रामलला॥ 8॥

मातु-पिता से सब जग उपजत, यह विधि की करतूति, रसिया रामलला॥ 9॥

तोहरे त महि से उपजत सब, अस हमरे नाहिं रीति रसिया रामलला॥ 10॥

लक्ष्मीनिधि की नारी कहत अस, सुन लाल नन्दोइ, रसिया रामलला॥ 11॥

एक बात हम तोहसे पूँछत, लाल न राखब गोइ रसिया रामलला॥ 12॥

तोहरे कुल की भगिनी प्यारी, सुन्दर शान्ता कुमारी रसिया रामलला॥ 13॥

की ओ ब्याही गई मुनि के संग, की मुनि लंइगे चुराइ रसिया रामलला॥ 14॥

सुनि मृदु बचन कहत रघुनन्दन, तू कस गइयु भुलाइ रसयिा रामलला॥ 15॥

जहँ संजोग होत तहँ पहुँचत, ब्याह तो कर्म अधीन रसिया रामलला॥ 16॥

कहँ हम राजकुँवर रघुवंशी, कंह विदेह वैराग रसिया रामलला॥ 17॥

भये हमार ब्याह तुम्हरे घर, विधि गति अचल अदाग रसिया रामलला॥ 18॥

सुनि सकुचाइ लजाइ चरन परि, नारि गईं हरषाइ रसिया रामलला॥ 19॥

सोहर बाबा मगन भये तब, हरि मूरति दर्शाइ रसिया रामलला॥ 20॥

(228)

गारी गावैं सुहागिनि नारि कुँवर वर चारी को ॥ टेक ॥

शची-शारदा-रमा-भवानी किये सुभग सिंगार कुँवर० ॥ 1 ॥

कपट नारि वर वेश बनाये गईं जनक दरबार कुँवर० ॥ 2 ॥

दूलह वेश विलोकि राम को, इक टक रहीं निहार कुँवर० ॥ 3 ॥

कुण्डल कान कपोलन सोहत, घुघुवारे कारे बार कुँवर० ॥ 4 ॥

पीताम्बर वर गात बिराजै, दामिनि की अनुहार कुँवर० ॥ 5 ॥

विप्रचरण छतिया बिच लौके, गर बैजन्ती हार कुँवर० ॥ 6 ॥

व्यंजन मधुर रस आगे धरा बा, जेव तू पाहुँन हमार कुँवर० ॥ 7 ॥

जेवन लागे अवध के बारे, सखी गावै मंगल चार कुँवर० ॥ 8 ॥

बार-बार हरिचरन निहार, तन-मन डारैं वार कुँवर० ॥ 9 ॥

सोहर बाबा निरखि छवि हरसैं धनि-धनि भाग हमार कुँवर० ॥ 10 ॥

(229)

कइसे जेउव्य ललन जेवनार तोहार मन डोलेला ॥ टेक ॥

जेंवइ बइठ्य पराये घरे में चितवत जइसे गवाँर तोहार० ॥ 1 ॥

व्यंजन मधुर रस आगे धराबा, जेंव तू पाहुंन हमार तोहार० ॥ 2 ॥

तोहरे बहिनियन क पेशा बदलिगा, घूमथीं रोजइ बजार तोहार० ॥ 3 ॥

घूमइ बजरिया बेसरिया पहिरि के पीछे लगेनि ठगहार तोहार० ॥ 4 ॥

भारी बेइज्जती करँइ ठगहरये, लूटँइ गले क हार तोहार० ॥ 5 ॥

बेरियाँ की बेरि तोहइ बरजँउ कुमति देई, कहा न मानिउँ हमार तोहार० ॥ 6 ॥

आपन तू पानी बजरिया में खोइउ, हुरमति गवाँइउ हमार तोहार० ॥ 7 ॥

भागिनि डगरिया बहुत पछितानी, भइया क किहिनि पुकार तोहार० ॥ 8 ॥

हे वीरन भइया ठगन से बचाव, घूमइ न जाबइ बजार तोहार० ॥ 9 ॥

सोहर बाबा संत ढिग जाइ जाइ, भवसागर होबइ पार तोहार० ॥ 10 ॥

(230)

जेंवइ आये विरन के सार ललन मोरे आगन में॥ टेक॥

टेढ़ी-मेढ़ी टोपी रतनारी लाली अंखिया काकुन संवारे झारे बार ललन० ॥ 1 ॥

लम्बी-लम्बी मोंछ दाढ़ी बाढ़ी वा सारन क, बने अपने बहिनिन क भाँड़ ललन० ॥ 2 ॥

अपने बहिनि के नचावँइ बजार में, अपुना बजावँइ सितार ललन० ॥ 3 ॥

बड़े-बड़े गुण्डन क पूँजी चुकाइ दिहें, चढ़ा-बढ़ा भारी रोजिगार ललन० ॥ 4 ॥

शान्ति बहिनि ज्ञान भइया से ब्याहि दिहें इहीं से लगथे संग सार ललन० ॥ 5 ॥

भक्ति के चारि सुत सुन्दर प्रकट भये, सम-शील-संतोष-सदाचार ललन० ॥ 6 ॥

माया के चारि सुत बड़े छलकारी, क्रोध-लोभ-मोह-मदमार ललन० ॥ 7 ॥

सुमति सुहागिनि रसोइयाँ बनावइ-कुमति करइँ सतकार ललन० ॥ 8 ॥

सुमति ने गंगाजल भरि झंझड़ में, कुमति परोसँइ मेंही धार ललन० ॥ 9 ॥

सुमति ने बीड़ा लगाइ दिहिनि खिलि-खिलि, कुमति दिहीं जादू डार ललन० ॥ 10 ॥

जादू के मारे भये सारे मतवारे, बोली बोलइँ जैसे गँवार ललन० ॥ 11 ॥

अपने बहिनि के बिदाई के कारण किहेन हमरे भइया से खार ललन० ॥ 12 ॥

कइद विदाई सार जाइ घर अपने, तब कर बइठि के बिचार ललन० ॥ 13 ॥

कइके विचार भव सागर से पार चल, जउने मिलँइ सजन तोहार ललन० ॥ 14 ॥

(231)

ललन अब जेंव हम गउबइ गारी ॥ टेक ॥

तूँ त ललन मोरे आँगन आयेउ, मैं नारी लखि भयउँ सुखारी ललन० ॥ 1 ॥

तूँ तो अवध के राजदुलारे, मैं हूँ विदेह किशोरी की प्यारी ललन० ॥ 2 ॥

षट्रस व्यंजन छप्पन भाँति क, परसाये हूँ कनक की थारी ललन० ॥ 3 ॥

पीढ़ा कनक जड़ा चन्दन का, झंझड़ भरा शीतल वारी ललन० ॥ 4 ॥

तोहरे पुर क चाल अजब है सुनि-सुनि होत भरम मोहि भारी ललन० ॥ 5 ॥

अवध नगर क नारी प्यारी, बिना पति पुत्र बनावन हारी ललन० ॥ 6 ॥

सुनि मुसुकाइ कहत रघुनन्दन, तू सयनि कस बनत अनारी ललन० ॥ 7 ॥

मातु-पिता से सब जग उपजत, यह विधि की महिमा बड़ी भारी ललन० ॥ 8 ॥

तोहरे त यह जनक नगर में, महि से प्रगटत सुन्दर नारी ललन० ॥ 9 ॥

लक्ष्मी निधि की नारि सयानी, बोलत हँसि-हँसि रूप निहारी ललन० ॥ 10 ॥

तोहरे कुल क राजकुमारी मुनि के साथ गइ कैसे बारी ललन० ॥ 11 ॥

सुनि मुसुकाइ कहत रघुनन्दन, विधि की महिमा भारी ललन० ॥ 12 ॥

कहँ हम राजकुँवर रघुबंशी, कहँ विदेह योगी व्रतधारी ललन० ॥ 13 ॥

भये विवाह विदेह नगर में एतनइ लेहु बिचारी ललन० ॥ 14 ॥

सुनि मुसुकाइ लजाइ चरन धरि, हँसत सकल मुख अंचल डारी ललन० ॥ 15 ॥

परिशिष्ट

सोहर बाबा के शिष्य

उपकार चैतन्य ब्रह्मचारी

(पं० उदयराज तिवारी बैद्य) के भजन

(1)

उठो-उठो जागो-जागो अपने पन का अभिमान करो।
अध:मुख से उन्मुख अभिमुख सम्मुख का प्रस्थान करो॥
भाग्य ने तेरा साज सजाया, महल चार तल्ले का पाया।
कर सन्तोष पड़ा एकी में चारों का अनुमान करो उठो० ॥ 1 ॥
नर से बनना यदि नारायण पढ़ ले काया का रामायन।
तज माया की स्वर्णिम लंका, पुरः तीन का ध्यान धरो उठो० ॥ 2 ॥
मोह जगत का छोड़ बिछौना, प्रश्न खेल का खेल खिलौना।
मोहं कोहं सोह से भी आगे का अभियान भरो उठो० ॥ 3 ॥
जाग्रत में जाग्रत को जानो-जाग्रत मध्य स्वप्न पहिचानो।
लहो स्वसुप्ति मध्य जाग्रत के समाधिस्थ का भान भरो उठो० ॥ 4 ॥
दयानन्द गुरु को पहिचानो स्वामिस्वरूपानन्दहि जानो।
उपकार चैतन्य ब्रह्मचारी का जाग्रत हो सम्मान करो उठो० ॥ 5 ॥

(6)

कहना न कथन में जीना है, सुनना न कथारस पीना है ॥ टेक ॥
कहत सुनत बहु भार बढ़यो, तन बोझिल मन करि दीना है ॥ 1 ॥
तीरथ भ्रमि-भ्रमि के तन धोवे, आतम तीर्थ न चीन्हा है ॥ 2 ॥
आसन मुद्रा माला फेर्‌यो, अहं अस्मि तजि दीना है ॥ 3 ॥
परखि नहीं सद्‌गुरु को पायो, जनम अकारथ कीना है ॥ 4 ॥

(7)

पिंजरे को सजाने वाले क्यों, पिंजरे से निकलना भूल गये ॥
बंदीघर को घर मान लिया, अपने घर चलना भूल गये ॥ टेक ॥
यह धर्म मेरा यह शास्त्र मेरा, यह नाम जाति कुल गोत्र मेरा—
यह मैं हूं यह सब मेरा है, इस ब्रत से टलना भूल गये ॥ 1 ॥
श्री राम कृष्ण शंकर दुर्गा, अल्ला जीसस में अलग-अलग
मन्दिर-मस्जिद गिरजा से बँधे, निज तंत्र टहलना भूल गये ॥ 2 ॥
पंचरंगी चूनर के ऊपर, तू धर्म की चादर ओढ़ लिया
जब ख्याति बढ़ गई चादर की, चादर को बदलना भूल गये ॥ 3 ॥
आवरण हटा पिंजरे को मिटा, पिंजरे में किसे भगवान मिले
उड़ चलो गगन में हे मैना, अपने में मचलना भूल गये ॥ 4 ॥

(८)

विचारों के भरमार से क्यों भरे हो, बहिर्भावनाए भुलाना पड़ेगा।
अगर चाहते अपने पन को हो पाना, तुम्हें दृष्टि भीतर घुमाना पड़ेगा॥ टेक॥
मुड़ो मुड़के अन्धेर भीतर से देखो, जो झगड़े अड़े हैं नजर फेर देखो
नहीं शास्त्र देखो न सिद्धान्त देखो, ये बामन के झगड़े पचाना पड़ेगा॥ 1॥
लगी है अहं त्वम् में तेरी जो आशा, है सारा जगत इन्द्रियों का तमाशा।
है संकल्प मन की निराशा-निराशा, निराशा से आशा हटाना पड़ेगा॥ 2॥
ये श्रद्धा अंधेरी है विश्वास अन्धा, समझना तुम्हें अन्धे अन्धों का धन्धा
लगाया लुटेरो ने कन्धे से कन्धा, यही गोरखधंधा मिटाना पड़ेगा॥ 3॥
परख-पारखी अपने मन को संभालो, सभी वासनाओं को मन से निकालो
सहजता सजगता को जीवन में ढालो, यही ज्योति भीतर जगाना पड़ेगा॥ 4॥

(९)

तू हो कौन आए यहाँ किसलिए हो, यही समझ पाना ही सज्ञानता है।
बड़े भाग्य से मानव जीवन मिला है निरर्थक बिताना ही अज्ञानता है॥ टेक॥
जिसे कह रहे मेरा वो तेरा नहीं है, सदा के लिये ये बसेरा नहीं है।
है डेरा यहाँ कल का डेरा कहीं है, बसेरा सजाना ही अज्ञानता है॥ 1॥
बनाया जो संसार कब तक रहेगा, मिला है जो पद भार कब तक रहेगा
ये धन धाम परिवार कब तक रहेगा, नहीं समझ पाना ही अज्ञानता है॥ 2॥
खड़ी भूल तेरी विषमता के पीछे, विषमता अड़ी है कृत्रिमता के पीछे
कृत्रिमता तो रहती सहजता के पीछे, सहजता भुलाना ही अज्ञानता है॥ 3॥
हो देही गुणातीत देहों के स्वामी, तू पंचकोशी हो कोसों के स्वामी
तू हो महत् तत्व तत्वों के स्वामी, स्वयं को भुलाना ही अज्ञानता है॥ 4॥

(10)

माटी के खिलौना देख जरा, जो दीख रहा वह माटी है ॥ टेक ॥
मन आस जहाँ वह माटी है, है वास जहाँ वह माटी है।
अभिमान जहाँ जिसमें जितना, ममता इसमें जो माटी है ॥ 1 ॥
इस काल की रचना माटी है, फल फूल मूल सब माटी है
जिससे तन तेरा बना हुआ, रज–वीर्य की रचना माटी है ॥ 2 ॥
तन अन्त समय में माटी है, धन–धाम की रचना माटी है
माटी से सभी कुछ हो करके, फिर अन्त समय में माटी है
सद्ज्ञान नहीं आया भीतर, लिखना–पढ़ना सब माटी है ॥ 4 ॥

(11)

मनवाँ काहे न रँगाये सुन्दर बाँके जोगिया ॥ टेक ॥
जटा बढ़ाये शिखा बनाए छापा तिलक लगाये
कंठ में कंठी धारण कइके माला खूब फिराये
मनवा काहे न फिराये सुन्दर० ॥ 1 ॥
तीरथ भ्रमि–भ्रमि खूब नहाए तप करि देह जलाए
आसन मुद्रा में तन तोरे देहिया उलटि घुमाए
मनवा काहे न घुमाए सुन्दर० ॥ 2 ॥
बइठि धूम पंचागिनि तापे जल बिच तन ठिठुराये
प्रकृति विरोध किहे निशिवासर देहिआँ खूब रजाए
मनवा काहे न रजाए सुन्दर० ॥ 3 ॥
अनहद सुने श्वाँस गति बांधे आसन पद्म लगाये
चेतन कहें बिना सद्गुरु के इन्द्रिन दाबि थिराये
मनवाँ काहे न थिराये सुन्दर० ॥ 4 ॥

सोहर बाबा गीतावली

(12)

रहिया भूल में भुलाये सुन्दर बांके जोगिया ॥ टेक ॥०
पद्धति और सिद्धान्त में पढ़िके आदि अन्त न पाये
वेद शास्त्र की पगडंडी पर मन की कार घुमाये
पढ़ि के माने औ मनाए सुन्दर० ॥ 1 ॥
शब्दइ ओढ़न शब्दइ डासन शब्द क सेज बिछायो
शब्द की चादर में फँसि गइले कर्ता शब्द भुलाए
बतिया बूझि नाहीं पाये सुन्दर० ॥ 2 ॥
ब्रह्मा-विष्णु-महेश देवता देवी तुम्हीं बनाए
सकल कल्पना कल्पित कइके कल्पक के बिसराये
रहिया जानि न जनाए सुन्दर० ॥ 3 ॥
चेतन पारख परखि न पाये सद्गुरु के बिसराये
भटकि-भटकि मत पंथ के पीछे लक्ष्य जानि न
पाये बाजी जीति के गँवाये सुन्दर० ॥ 4 ॥

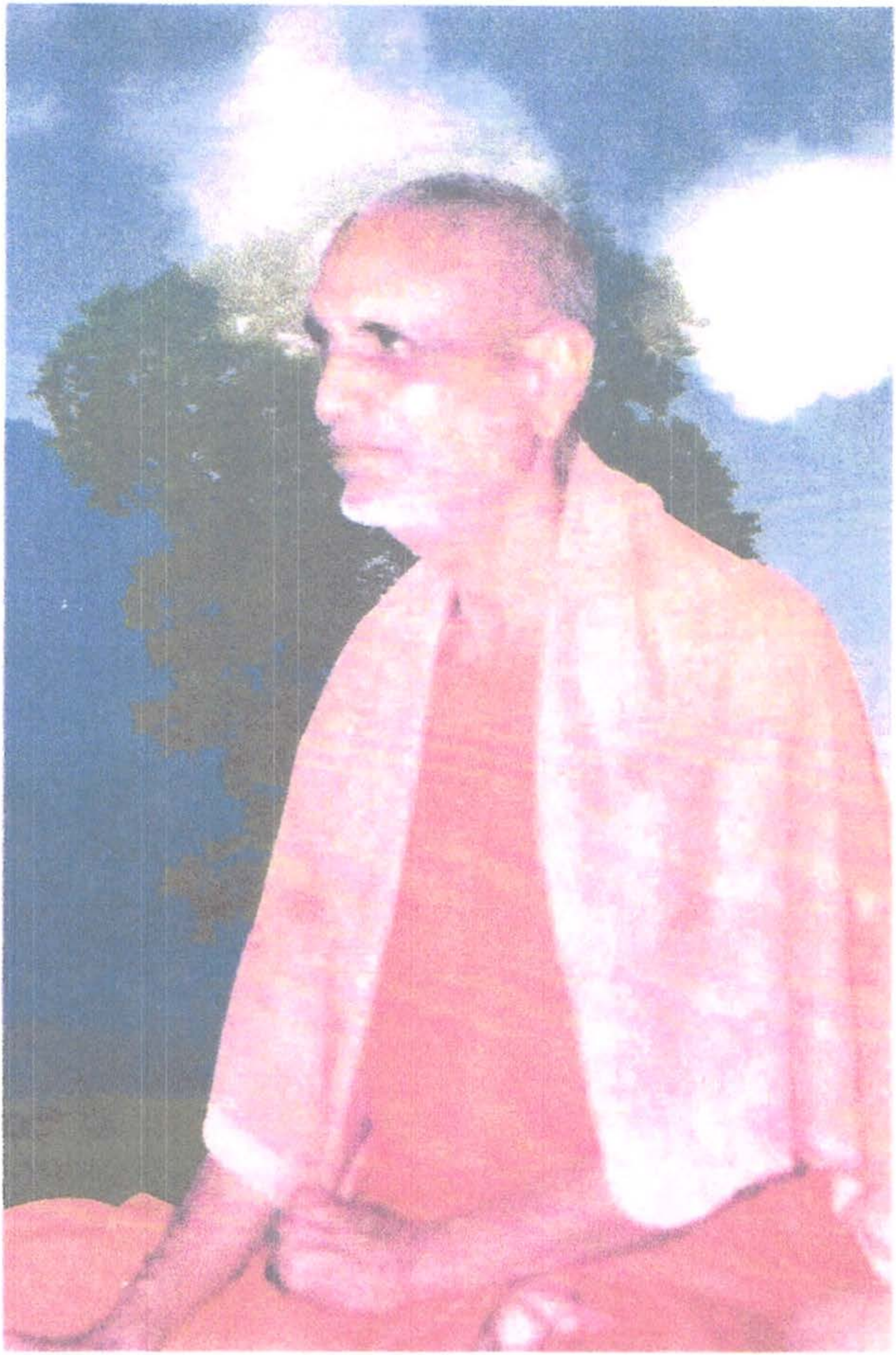

सोहर बाबा के अनन्य शिष्य उपकार चैतन्य ब्रह्मचारी (पं. उदयराज तिवारी वैद्य)